www.thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 03 नवम्बर 2013 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार 03 नवम्बर, 2013 से 09 नवम्बर 2013

कार्तिक कृ. –15 ● वि० सं०–2070 ● वर्ष 78, अंक 80, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 190 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,114 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

डी.ए.वी. सूरजपुर (हरियाणा) में हुई भजन सन्ध्या

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल सूरजपुर में द्वितीय सत्र 2013 का शुभारम्भ यज्ञ हवन से हुआ। विद्यालय सभी अध्यापकों एवं विद्यार्थियों ने यज्ञ की अग्नि में आहुतियाँ प्रदान कीं। यज्ञ की महत्ता पर व्याख्यान हुआ। जिन बच्चों का जन्म दिन था उन्होंने यज्ञोपरान्त प्रधानाचार्या से आशीर्वाद प्राप्त किया। सायंकाल आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा के तत्वावधान में आर्य युवा समाज द्वारा संयोजित भजन संध्या का शुभारम्भ किया गया जिसमें अध्यापकों, अभिभावकों व पिंजौर, कालका, पंचकूला, मोहाली, चण्डीगढ़ के आर्य समाजों के प्रतिनिधियों तथा डी.ए.वी. विद्यालयों तथा महाविद्यालयों के प्राचार्यो व शहर के गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लेकर भजन संध्या की शोभा बढ़ाई। भजन संध्या का शुभारम्भ श्रीमति सुदेश गन्धार, श्री बी. सी. जोसन, श्री विजय कुमार, प्राचार्या श्री मति अनुजा शर्मा जी द्वारा दीप प्रज्ज्वलित करके, किया गया। स्कूल के विद्यार्थियों ने भी वैदिक भजन प्रस्तुत किये। श्री बृजेश आहुजा, श्री सुनील ध्यानी, श्रीमति मंजीत ध्यानी, पण्डित विनोद सावरनी ने अपनी मधुर स्वर लहरियों से श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर दिया। श्रीमति सुदेश गन्धार ने अपने अभिभाषण में कहा कि डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाएँ माता पिता के साथ मिल कर बच्चों में अच्छे संस्कार डालने का प्रयास कर रही हैं।

वैदिक साधना आश्रम तपोवन, देहरादून से आए स्वामी ओंकार आनन्द सरस्वती जी ने ओ३म् तथा सन्ध्या का महत्त्व बताते हुए आशीर्वाद वचन कहे। स्कूल प्रबन्धक श्री विजय कुमार जी ने सभी का धन्यवाद किया तथा कलाकारों को सम्मानित किया। स्कूल प्राचार्या श्री मति अनुजा शर्मा ने कहा कि हम आर्य हैं और सभी को आर्य बनाने का प्रयास करें। चेयर पर्सन श्रीमति स्नेह महाजन, रिजनल डायरेक्टर श्रीमति मधु बहल ने भी विद्यार्थियों को सम्बोधित किया। अन्त में शान्ति पाठ के साथ विधिपूर्वक कार्यक्रम का समापन हुआ।

आर्य जगत्-परिवार की ओर से सभी पाठकों को दिपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ
ईश्वर हम सब को अज्ञान के अंधकार से निकाल कर प्रकाश की ओर ले जाये।
–सम्पादक

एस.टी. डी.ए.वी. सूरतगढ़ ने किया हवन का आयोजन

एस.टी. डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल सूरतगढ़ में आर्य युवा समाज के तत्वावधान में हवन का आयोजन किया गया जिसमें यजमान के रुप में श्रीमान् पी.सी. शर्मा मुख्य अभियंता, एसटीपीएस, श्री मान् ए. के. गर्ग अतिरिक्त मुख्य अभियंता, श्री मान् एम. के वर्मा सुपरिटेंडिंग इंजीनियर को सादर आमंत्रित किया गया। प्राचार्य नमित शर्मा ने सभी यजमानों का अभिनंदन किया। गायत्री मन्त्र व वैदिक मन्त्रों के उच्चारण के साथ हवन की क्रिया प्रारम्भ की गई। विद्यालय के सभी शिक्षक व शिक्षिकाएँ भी हवन में शामिल हुईं। वातावरण वैदिक मन्त्रों की ध्वनियों से गूँज उठा। सभी ने बड़े प्रेम, जोश उल्लास, श्रद्धा व विश्वास के साथ समिधा, घृत व हवन सामग्री की आहुतियाँ दीं।

मुख्य अधिकारियों द्वारा शिक्षकों को उनके अच्छे कार्यों की प्रशंसा करते हुए सम्मानित किया गया। माननीय मुख्य अतिथि महोदय श्री मान् ए.बी. अग्रवाल जी ने शिक्षकों को उनके कर्त्तवयों का भान कराते हुए अपने अभिभाषण में कहा 'शिक्षा के साथ–साथ नैतिक शिक्षा व व्यायाम भी बालक बालिकाओं के लिए आवश्यक है क्योंकि आज की युवा पीढ़ी इन सब से दूर होती हुई आदर्श जीवन–मूलयों को खोती जा रही है। प्राचार्य महोदय ने पधारे हुए सभी अतिथियों को धन्यवाद किया। प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

स्वर्णजयंती पर भाषा एवं कम्प्यूटर प्रयोगशाला का हुआ उद्घाटन

जियालाल शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान, अजमेर की स्वर्ण जंयती के अवसर पर यू.जी.सी. अनुदाना से बनी भाषा एवं कम्प्यूटर प्रयोगशाला का उद्घाटन श्री डी.एस. चौहान उपसचिव यू.जी.सी. के द्वारा किया गया। इस अवसर पर महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय अजमेर के श्री सर्वेश्वर पालडिया तथा डॉ. राजेश, प्राचार्य डी.ए.वी. कॉलेज, अजमेर तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे। इस अवसर पर संस्थान की प्राचार्या डॉ. इन्दु तनेजा ने अतिथियों का स्वागत कर अनुदान की संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की तथा संस्थान की व्याख्याता डॉ. अल्का सक्सेना द्वारा यू.जी.सी. के अन्तर्गत प्राजेक्ट की संक्षिप्त रिपोट प्रस्तुत की। श्री डी.एस.चौहान ने शोध की महत्ता पर प्रकाश डाला एवं भविष्य में यू.जी.सी. द्वारा अधिक से अधिक अनुदान देने की योजना का विवरण भी प्रस्तुत किया। अस अवसर पर संस्थान के छात्र–छात्राओं ने इस आयोजन में उत्साह पूर्वक भाग लिया।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. ९

संपादक – श्री पूनम सूरी

www.thearyasamaj.org

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार 03 नवम्बर, 2013 से 09 नवम्बर, 2013

क्रव्यात् अग्नि दूर हो

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

यत् कृषते यद् वनुते, यच्च वस्नेन विन्दते।
सर्व मर्त्यस्य तन्नस्ति, कव्याच्चेदनिराहितः।।
अथर्व12.2.36

ऋषिः भृगुः। देवता **अग्निः**। छन्दः **अनुष्टुप्**।

● **(यत्)** जो **(कृषते)** खेती–बाड़ी से प्राप्त करता है, **(यत्)** जो **(वनुते)** [भिक्षा–वृत्ति से या पितृधन आदि के रूप में] मांगकर प्राप्त करता है, **(यत् च)** और जो **(वस्नेन)** मूल्य से **(विन्दते)** प्राप्त करता है, **(मर्त्यस्य)** मनुष्य का **(तत् सर्व)** वह सब **(नास्ति)** नहीं रहता, **(चेत)** यदि **(क्रव्यात्)** मांसभक्षी चिताग्नि **(अनिराहितः)** निष्कासित नहीं किया जाता।

● मनुष्य खेती–बाड़ी करता है। भूमि सस्य–श्यामला हो जाती है। फसल पकती है, कटती है, अन्नागारों में भरी जाती है। कृषक को ऐश्वर्यवान् कर देती है। अनेक साधनों में से यह कृषि ऐश्वर्यशाली बनने का एक साधन है। इसके अतिरिक्त मांगने से, भिक्षावृत्ति से भी, ऐश्वर्य प्राप्त होता है। ब्रह्मचारी भिक्षावृत्ति से निर्वाह करता है, आचार्य भिक्षावृत्ति से शिक्षण ालय चलाता है, संन्यासी भिक्षावृत्ति से जीवन–यापन करता है। संस्थाएँ भिक्षावृत्ति से चलति हैं, लोकोपयोगी सेवा–कार्य भिक्षावृत्ति चलते हैं। मनुष्य को पितृधन आदि के रूप में भी भिक्षा मिलती है। इस प्रकार मांगना भी ऐश्वर्य–प्राप्ति का एक साधन है। जो मनुष्य धनी होते हैं, जिनके पास उपभोग के लिए पर्याप्त द्रव्य होता है, वे मूल्य से क्रय करके भी ऐश्वर्य उपार्जित करते हैं, साज–समान से सुसज्जित बड़ी–बड़ी कोठियाँ खड़ी कर लेते हैं, रथ–बग्घी, बाग–बगीचे, कल–कारखाने खड़े कर लेते हैं।

चाहे कृषि से प्राप्त ऐश्वर्य हो, चाहे भिक्षावृत्ति से प्राप्त ऐश्वर्य हो, चाहे मूल्य से खरीदा हुआ ऐश्वर्य हो, चाहे अन्य किसी साधना से प्रयत्नपूर्वक जुटाया गया ऐश्वर्य हो, सब एक क्षण में समाप्त हो जाता है, यदि अकाल मृत्यु आकर मनुष्य को कवलित कर लेती है। अतः, राष्ट्र से अकाल मृत्यु दूर होनी चाहिए। ये जो श्मशान में शिशुओं की, कुमारों की, नवयुवकों की, पूर्ण आयु से पूर्व ही मृत हो गये अन्य नर–नारियों की शवभक्षी चिताग्नि के क्रन्दनकारी दृश्य दिखाई देते हैं, वे समाप्त होने चाहिएँ। देश का प्रत्येक मनुष्य चिरजीवी हो, स्वस्थ रहता हुआ शत वर्ष या शत वर्ष से भी अधिक आयु को प्राप्त करे, इसका प्रयास होना चाहिए। यह प्रयास वैयक्तिक, सामाजिक और राष्ट्रिय तीनों स्तरों पर हो तो पर्याप्त अंशों में हम 'क्रव्यात् अग्नि' अर्थात् मांसभक्षी चिताग्नि को देश से निष्कासित कर सकते हैं। वैयक्तिक रूप से हम स्वास्थ्य के नियमों का पालन करें, उचित आहार–विहार रखें, सामाजिक और राष्ट्रिय रूप में चिकित्सा–साधनों एव चिकित्सा–शिक्षा आदि को सुलभ करायें।

आओ, हम सब मिलकर 'क्रव्यात् अग्नि' को निराहित करें, गलहत्था देकर राष्ट्र–भूमि से निष्कासित करें तथा विविध साधनों से उपार्जित ऐश्वर्यों का चिरकाल तक संयम–पूर्वक वेद–विहित रीति से उपभोग करते रहें। ❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

तत्त्व-ज्ञान

● **महात्मा आनन्द स्वामी**

बात चल रही थी कि प्रजापति की संतान देवता और असुर, जब एक–दूसरे पर विजय पाने का प्रयत्न करने लगे, तो देवताओं ने उद्गीथ (ओम्) को ग्रहण किया कि इससे हम इन असुरों को दाबा लेंगे। उन्होंने नासका, वाणी, आँख, श्रोत्रा और मन, सब की दृष्टि से ओम् की उपासना की, परंतु असुरों ने इन सब को पाप से बींध दिया। अंत में देवता प्राण की शरण में गये और प्राण को ओम् की उपासना करने को कहा। जब असुर प्राण को बांधने के लिये पहुंचे तो इस प्रकार बिखर गये जैसे मिट्टी का ढेला पत्थर पर लगकर चूर–चूर हो जाता है। स्वामी जी ने प्राण को निःस्वार्थ सेवक, परमार्थी और परोपकारी बताते हुए कहा कि यही हमारे काम में आ सकता है– और इतिहास के आधार पर बताया, जिनैंने प्राण को अपनाया और इसके द्वारा मन पर विजय प्राप्त करने का यत्न किया वे ही इसमें सफल हुए। आगे चलकर हठयोग पद्धति का उद्धाहरण देकर यह बताया कि प्राण किस प्रकार चित्त और मन की वृत्तियों का नाश करने में सहायक हो सकता है। योग वासिष्ठ के आधार पर यह बताया कि मन की गति प्राण परिस्पंदन के अधीन है, अतः प्राण का निरोध करने पर मन अवश्य उपशांत हो जाता है। आगे चलकर स्वामी जी ने बताया के प्राण तथा मन के निरोध के लिए दो मुख्य साधन हैं प्राणायाम और ध्यान। दोनों ही प्रकार के साधनों के लिए एक ही आसन पर चिरकाल तक निश्चल बैठने का अभ्यास अनिवार्य है। जिनकी शारीरिक अवस्था अच्छी नहीं, उन्हें अपना स्वास्थ्य सुधारने के साथ–साथ इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए खान–पान, स्वभाव तथा व्यवहार को नियमित करना होगा।

अब आगे

शरीर के तीन उपस्तम्भ

शरीर को स्वस्थ रखने के लिए यह जान लेना लाभदायक होगा कि इसका आधार क्या है?

चरक सूत्रस्थान के अध्याय 11 का 32 वाँ वाक्य यह है:

त्रय उपस्तम्भा इत्याहारः स्वप्नो ब्रह्मचर्य्यमिति–एभिस्त्रिभिः युक्तयुक्तैरुपस्तब्धमुपस्तंभैः शरीरं बलवर्णोपचयोपचितं मनः वर्तते यावदायुषः संस्कारात्।।

'आहार, निद्रा, ब्रह्मचर्य, ये शरीर के तीन उपस्तम्भ (खम्भे) हैं। इन तीनों के ठीक सेवन से शरीर में बल बना रहता है, वर्ण की वृद्धि होती रहती है; और इनके अनुचित व्यवहार से आयु की हानि करने वाले रोग पैदा होते हैं।

आहार

आहार पर बहुत कुछ निर्भर है। धन्वन्तरि जी कहते हैं :

प्राणिनां पुनर्मूलमाहारो बलवरणौजसाम्।।
सूत्रस्थान 1.58.

'समस्त जीवों और उनके बल–रूप ओजादि का मूल आहार है।' यदि आहार युक्त तथा पौष्टिक नहीं होगा तो न पूरी निद्रा मिलेगी, न ही ब्रह्मचर्यपूर्वक जीवन व्यतीत करने की शक्ति आएगी। यह रहस्य सर्वदा अपने समक्ष रखना चाहिए कि आहार स्वाद के लिए नहीं, अपितु शरीर–रक्षा तथा शारीरिक और मानसिक बल के लिए है। जो लोग अधिक लाल मिर्चों का या अति खटाई का प्रयोग करते हैं या जिनको अधिक चटपटी वस्तुओं के बिना भोजन रुचिकर प्रतीत ही नहीं होता, वे कभी एकान्त में बैठकर विचार करें तो उन पर प्रकट हो जाएगा कि इस प्रकार की वस्तुओं से उनकी हानि ही हुई है। स्वादाधीन होकर भूख से अधिक खा लेना और फिर चटोरापन का दास होकर पेट में ऐसी वस्तुएं पहुँचा देना, पेट के कारखाने को बिगाड़ देना कहाँ की बुद्धिमत्ता है? उदर को तो भूखा–सा ही रखना चाहिए। पेट अमीर के स्थान पर फकीर ही अच्छा। जितना हम इसे अधिक भरेंगे, यह उतना अधिक हमारे शरीर को रोगी रखेगा।

स्वाद बाहर की वस्तु नहीं, अन्दर की देन है। जब पूरी क्षुधा लगी हो तो भुने हुए चने और सत्तू भी वह स्वाद देते हैं कि उनके सामने सब पदार्थ तुच्छ हो जाते हैं; और यदि पेट में विकार हो, क्षुधा उड़ चुकी हो तो स्वादु–से–स्वादु पदार्थ भी अस्वादु प्रतीत होते हैं।

स्वाद के पीछे

जिह्वा (रसेन्द्रिय) दो कामों के लिए मिली थी– (1) एक तो इसलिए ताकि

www.thearyasamaj.org

हम अपने विचार प्रकट कर सकें और प्रभु–भजन भी कर सकें; (2) दूसरे, यह जिह्वा हमें आहार के सम्बन्ध में बतला सके कि यह सड़ा–गला तो नहीं? खाने योग्य तो है? परन्तु हमने जिह्वा का दुरूपयोग प्रारम्भ कर दिया, चटपटी वस्तुओं के पीछे भागने लगे, जिससे मन भी बिगड़ा और शरीर भी। केवल जिह्वा के स्वाद को पूरा करने के लिए आप देखिए तो सही, मनुष्य को क्या–कुछ करना पड़ रहा है। इसका प्रयोजन यह नहीं कि हम अस्वादु भोजन खाना शुरू कर दें; अपितु प्रयोजन यह है कि जिह्वा के स्वाद के पीछे इतने पागल न हो जाएँ कि जिह्वा की ही माँगें पूरी करने में लगे रहें। इस जिह्वा ही के कारण पशु–पक्षियों का वध आरम्भ हुआ और आधुनिक काल की दुनिया के बहुत से देश इसी रोग से ग्रस्त हैं। सहस्रों, लक्षों, अरबों पशु–पक्षी प्रतिदिन जिह्वा के स्वाद के लिए मारे–काटे जाते हैं। करोड़ों मनुष्य दूसरों के जिह्वा–स्वाद को ही पूरा करने के धन्धे में लगे हुए हैं। देवियाँ दिन–रात इसी चिन्ता में रहती हैं कि अधिक स्वादु भोजन कैसे बनाया जाए?

ज्ञानेन्द्रियों में जिह्वा और कर्मेन्द्रियों में उपस्थ या गुप्तेन्द्रिय – इन दो इन्द्रियों को विशेष रूप से जिसने अपने वश में नहीं किया, वह प्रभु–दर्शन (मोक्ष) का स्वप्न भी नहीं ले सकता। लेकिन आज दुनिया बहुधा इन्हीं दो इन्द्रियों के जाल में बुरी तरह फँसी हुई है। जिस साधु, संन्यासी, महात्मा को इन इन्द्रियों की तुष्टि की चिन्ता घेरे रखती है, वह तो इस आश्रम का अधिकारी ही नहीं समझा जाता।

इन्द्रियाणि जयन्त्याशु निराहारा मनीषिणः।
वर्जयित्वा तु रसनं तन्निरन्नस्य वर्धते।।
तावज्जितेन्द्रियो न स्याद् विजितान्येन्द्रियः पुमान्।
न जयेद्रसनं यावज्जितं सर्वं जिते रसे।।

'विद्वान् निराहार रहकर और रसेन्द्रिय को छोड़कर इन्द्रियों को शीघ्र जीत लेते हैं, किन्तु निरन्न पुरूष का (जिसने अन्न छोड़ रखा है) रसेन्द्रिय बढ़ता है। पुरूष दूसरे इन्द्रियों को जीतकर भी तब तक जितेन्द्रिय नहीं होता, जब तक रसेन्द्रिय को नहीं जीत लेता। इसके जीत लेने से सब पर विजय प्राप्त हो जाती है।'

इतना बड़ा महत्त्व रसेन्द्रिय का है। बुद्धिपूर्वक ही अपने इस इन्द्रिय से कार्य लेना होगा। बुद्धि की जब भी उपेक्षा करके इसकी अतिस्वाद की लालसा पूरी करने की ओर झुकेंगे, तभी नाना रोग और पापों को निमन्त्रण दे दिया जाएगा।

भोजन में क्या हो?

एक मनुष्य के भोजन में क्या–कुछ चाहिए, यह निश्चित रूप से कहना कठिन है; क्योंकि मनुष्यों की प्रकृतियाँ भिन्न–भिन्न हैं, स्वभाव भी पृथक–पृथक हैं। जो पित्त प्रधान प्रकृति का व्यक्ति है, उसके लिए शीतल गुण रखने वाले खाद्य पदार्थ अधिक उपयोगी होते हैं; परन्तु वात–प्रधान प्रकृतिवाला यदि ठण्डी या रूक्ष वस्तुओं का प्रयोग करेगा तो शरीर के सन्धिस्थानों में पीड़ा–ही–पीड़ा होने लगेगी और वायु–सम्बन्धी नाना रोग घेर लेंगे। अतएव देख लीजिये कि आपके लिए कौन से खाद्य पदार्थ अनुकूल और कौन–से प्रतिकूल हैं। बुद्धिपूर्वक फिर उनका प्रयोग कीजिए।

चरक सूत्रस्थान, अध्याय पाँच में भोजन के सम्बन्ध में यह लिखा है :

षष्टिकान् शालिमुद्गांश्च सैन्धवामलके यवान्।
आन्तरीक्षं पयः सर्पिर्जाङ्गलं मधु चाभ्यसेत्।। 5।।
तच्च नित्यं प्रयुञ्जीत स्वास्थ्यं येनानुवर्त्तते।
अजातानां विकाराणामनुत्पत्तिकरञ्च यत्।। 6 ।।

'साठी के चावल, शाली चावल, मूँग, सैंधा नमक, आँवले, गेंहूँ, आकाश (वर्षा) का जल, दूध–घी, शहद, इनका नित्य सेवन करे। देह की स्वस्थावस्था को जो द्रव्य न बिगाड़े और रोगों को उत्पन्न न करे, वह पदार्थ खाना चाहिए।

रोगों का कारण

भगवान् ने मानव शरीर रोगी होने के लिए नहीं दिया है अपितु इसके द्वारा प्रभु के निकट पहुँचने के लिए दिया है। इसको रोगी अथवा स्वस्थ रखना हमारी बुद्धि के आधीन है। आयुर्वेद शास्त्र में यही कहा है कि, ''सारे रोगों का मूल–कारण प्रज्ञा का बिगड़ना है।'' जो व्यक्ति इस बात को समक्ष रखे बिना कि कौन–से खाद्य पदार्थ मेरे अनुकूल और कौन–से प्रतिकूल हैं, भोजन करते हैं, वे बुद्धि से काम नहीं लेते; या जिनकी बुद्धि ही भ्रान्त हो गई है, या रजोगुण तथा तमोगुण के प्रभाव से प्रतिकूल भोजन अत्यन्त स्वादु प्रतीत होता है। परन्तु ऐसा भोजन शरीर को रोगी बनाने लगता है; और प्रज्ञा के अपराध से रोग ही नहीं आते, अपितु सर्वनाश होने लगता है। चरक शरीरस्थान अध्याय 1 मे लिखा है:

धीधृतिस्मृतिविभ्रष्टः कर्म यत्कुरुतेऽशुभम्।
प्रज्ञापराधं तं विद्यात्सर्वदोषप्रकोपकम्।। 101 ।।

'बुद्धि, धृति और स्मृति के नष्ट होने से यह मनुष्य जिस अशुभ कर्म को करता है उसको प्रज्ञापराध अर्थात् बुद्धि का दोष कहते हैं।'

आहार के सम्बन्ध में यदि प्रज्ञा ठीक पथ–प्रदर्शन नहीं करती तो भारी हानि होने का भय है। आहार शुद्ध और यथार्थ न होने से केवल शरीर ही नहीं बिगड़ता, अपितु मनुष्य–जीवन के ऊँचे उद्देश्य ही का अन्त हो जाता है; क्योंकि आहार ही मोक्ष की आधार–शिला है। छान्दोग्योपनिषद् के सातवें प्रपाठक के 26वें खण्ड का अन्तिम आदेश यह है :

आहारशुद्धौ सत्त्वशुद्धिः सत्त्वशुद्धौ ध्रुवा स्मृतिः।
स्मृतिलम्भे सर्वग्रन्थीनां विप्रमोक्षः।।

'जब मनुष्य का आहार शुद्ध हो जाता है तो उसका (सत्त्व) अन्तःकरण शुद्ध हो जाता है और जब अन्तःकरण शुद्ध हो जाता है तो स्मृति अटल हो जाती है और फिर (भूमा–आत्मा की) स्मृति पक्की हो जाती है, तब सारी ग्रन्थियाँ खुल जाती हैं।'

यहाँ आहार से जहाँ जिह्वा का आहार अभिप्रेत है, वहाँ सारी ही इन्द्रियों के आहार का भी संकेत है। जहाँ भोजन नेक कमाई का और अधिक सात्त्विक हो, वहाँ नेत्र, श्रोत्र इत्यादि इन्द्रियों के जो आहार हैं वे भी शुद्ध होने चाहिएँ अर्थात् राग–द्वेष से रहित होकर सब इन्द्रियों के विषयों को ग्रहण करना ही आहार की शुद्धि है।

अतएव आहार के सम्बन्ध में पूरा सावधान होना चाहिए और यदि अपनी बुद्धि ठीक मार्ग नहीं दिखला सकती तो फिर आहार के सम्बन्ध में दूसरों से आदेश लेना चाहिए। मेरा अनुभव यह है कि भोजन में ये पदार्थ आवश्यक हैं– गेहूँ का मोटा आटा, घी, दाल अथवा शाक या दोनों, दूध–दही, चावल, गुड़ या चीनी, बाजरा यदि अनुकूल हो, कुछ फल। भोजन के साथ या तो एक दाल होनी चाहिए या एक शाक। जो लोग पाँच–पाँच सात–सात या इनसे भी अधिक व्यञ्जन प्रयोग में लाते हैं, उनके उदर में जाकर वे व्यञ्जन ऊधम मचाना आरम्भ कर देते हैं। हाँ, घी, दूध, दही का पर्याप्त मात्रा में सेवन करना चाहिए। आजकल जो नाना प्रकार के नकली घी बने हैं, उनको यदि तेल ही के रूप में रहने दिया जाता तो वे कुछ लाभदायक होते, परन्तु काग को हंस का वेष पहनाने के लिए (ऐसा कथन किया जाता है) इन तेलों में हानि पहुँचानेवाले नाना रासायनिक द्रव्य प्रयोग में लाकर घी का रूप दिया जाता है। कितने ही वैज्ञानिकों ने पहले यह बताया था कि ऐसे बने या बिगड़े हुए तेल मनुष्य–शरीर के लिए हितकर नहीं हैं; मनुष्य यदि इनका प्रयोग करता रहा तो वह अपने लिए रोगों, दुःखों, और भयंकर परिणामों का एक नया क्षेत्र खोल लेगा। जितना धन नकली घी के तैयार करने में व्यय हो रहा है, यदि यही धन गोवंश की वृद्धि में व्यय किया जाय तो आर्थिक तथा शारीरिक और आत्मिक तीनों लाभ प्राप्त किए जा सकते हैं। परन्तु गोवंश की वृद्धि की ओर ध्यान देने के स्थान पर यहाँ तो मुर्गा–(कुक्कुट)–प्रदर्शनी तथा कुत्ता–(कुक्कुर)–प्रदर्शनी हो रही है। मानव के ये पतन ही के चिह्न हैं।

गोघृत रसायन है

गाय का दूध और गाय का घी तो रसायन हैं। गोघृत में विषों के नाश करने की शक्ति है। यदि सर्प डस ले तो गोघृत–पान से विष का बड़ा भाग नष्ट हो जाता है। भैंस के घृत में इतना अधिक गुण नहीं है और नकली घी तो उलटा विष उत्पन्न कर देता है।

गोदुग्ध के सम्बन्ध में देखिए 'सुश्रुत' के कर्त्ता श्री धन्वन्तरि जी क्या कहते हैं:

गोक्षीरमनभिष्यन्दी स्निग्धं गुरुरसायनम्।
रक्तपित्तहरं शीतं मधुरं रसपाकयोः।।
जीवनीयं तथा वातपित्तघ्नं परमं स्मृतम्।।

सूत्रस्थान अ0 55 ।श्लो0 4 ।6 ।।

'गौ का दूध अभिष्यन्दी नहीं (रसवहा नाड़ियों को नहीं रोकता), स्निग्ध है, भारी रसायन है, रक्तपित्त दूर करता है, शीतल है, रस में और विपाक में मीठा है, जीवनदाता है। वायु और पित्त को शान्त करने वाला है।

ऐसा जीवनदाता, रसायन, विषनाशक गोदुग्ध और गोघृत छोड़कर आज भैंसों, कुत्तों और मुर्गों ही की पालना हो रही है।

वेद में गो–महिमा

गोदुग्ध की प्रशंसा वेद भगवान् ने स्थल–स्थल पर की है और गौ के समान और कोई संसारी वस्तु नहीं बतलाई। यजुर्वेद के 23 वें अध्याय के 47 वें मन्त्र में एक प्रश्न है:

''कस्य मात्रा न विद्यते?''

'किसके समान कोई वस्तु नहीं?' तो इसका उत्तर भगवान् ने 48वें मन्त्र में यह दिया कि:

''गोस्तु मात्रा न विद्यते।''

'संसार में गौ के समान कोई वस्तु नहीं।' और गोदुग्ध के लिए कितनी सुन्दर प्रार्थना है:

''मह्यीनां पयोऽसि, वर्चोदा असि वर्चो मे देहि।''

'तू गायों को दूध है, शरीर में कान्ति देने वाला है, मेरे शरीर को भी कान्ति प्रदान कर।'

अथर्ववेद (10 । 10। 34) में तो वंशा गौ के भरोसे ही देवताओं और मनुष्यों का जीवन चलता है। अथर्ववेद के पहले काण्ड के 22वें सूक्त में हृदय–रोग की चिकित्सा का वर्णन है जो रोग आज तीव्रता से बढ़ रहा है। वहाँ लिखा है कि लाल रंग की गायों के दूध से हृदय और पाण्डु रोग दूर होते हैं।

गोदुग्ध को इतना हितकर समझकर ही सनातन वैदिक संस्कृति के चार स्तम्भों में एक स्तम्भ ''गौ–वंश की वृद्धि'' है। जब से गौ–वंश का ह्रास होने लगा है, तब से नाना रोग और दुःख बढ़ गए हैं।

शरीर को स्वस्थ और सुन्दर बनाए

शेष पृष्ठ 5 पर ☞

www.thearyasamaj.org

'ईश्वर' वेद और विज्ञान की दृष्टि में

● शिवनारायण उपाध्याय

वैदिक वाङ्मय में वेदान्त दर्शन ब्रह्म की खोज का दर्शन है। इसलिए इसका प्रारंभ ही **'अथातो ब्रह्म जिज्ञासा'** से हुआ है। वेदान्त दर्शन का अध्ययन करने से पूर्व अध्येता को धर्मशास्त्र और दर्शनशास्त्र का ज्ञान होना भी आवश्यक है। स्वामी शंकराचार्य का मानना तो यह है कि वेदान्त दर्शन के अध्येता को पहले छः वेदाङ्ग, चारों वेद, पाँच अन्य दर्शन तथा उपनिषदों का अध्ययन कर लेना चाहिए और उसके बाद ही वेदान्त दर्शन का अध्ययन प्रारम्भ करना चाहिए।

वेदान्त दर्शन में ब्रह्म की सिद्धि हेतु कुछ प्रमाण दिए हैं। जो इस प्रकार हैं–

जन्माद्यस्यतः॥ वे.द.1.1.2 अर्थात् सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय जिससे होती है उसी को ब्रह्म कहते है।

वेदान्त दर्शन के अनुसार प्रकृति जड़ होने के कारण स्वयं जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय करने में असमर्थ है।

दूसरा तर्क है, **'शास्त्रयोनित्वात्॥'** वे.द. 1.1.31 मनुष्यों को नियम पूर्वक चलाने वाले ऋग्वेदादि शास्त्रों का कारण होने से वेदान्त दर्शन की मान्यता यह है कि स्वाभाविक ज्ञान के द्वारा ज्ञान का विकास सम्भव है। अर्जित ज्ञान ही ज्ञान के विकास का कारण होता है। सृष्टि के प्रारंभ में मानव जाति को यह ज्ञान ईश्वर रूप में वेदों के द्वारा दिया गया। जहाँ–जहाँ यह ज्ञान पहुँचता गया वहाँ–वहाँ पर मानव का विकास भी होता गया और अंडमान निकोबार में यह ज्ञान नहीं पहुँचा तो वहाँ के निवासी आज भी पशुवत् जीवन जी रहे हैं। विज्ञान के क्षेत्र में जो अनुसंधान वैज्ञानिकों द्वारा किए गए हैं वे भी अर्जित ज्ञान को विकसित करके ही किए गए हैं।

पश्चिम के वैज्ञानिकों में आर्किमिडीज, गैलिलियो, न्यूटन, नील्स बोर, बर्नर हैजनबर्ग, आइन्स्टाइन आदि ने जो अनुसंधान और खोजें की हैं क्या वह उनके स्वाभाविक ज्ञान का फल हैं? क्या उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन विज्ञान के अध्ययन को समर्पित नहीं किया था? मार्कोनी जब महाविद्यालय में अध्ययनरत था और कक्षा में 'हटर्ज लहरों' के विषय में प्रोफेसर पढ़ा रहे थे तभी तो उसने कहा था कि यदि 'हटर्ज लहरों' की बात सही है तो मैं उसे आधार बना कर 'बेतार का तार' बना सकता हूँ।

अगला प्रमाण दिया गया है, **'तत्तु समन्वयात्'** (वे.द. 1.1.4) सब विद्वानों के लेखों का एक मत होने से अथवा सबका उसमें सम्मत होने से।

अब हम ब्रह्म के स्वरूप व कार्य पर वेदों के चिन्तन पर विचार करते हैं।

ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 70 ऋचा 1 में कहा गया है–

त्रिरस्मै सप्त धेनवो दुदुह्रे सत्यामाशिरं पूर्व्ये व्योमनि।

चत्वार्यन्या भुवनानि निर्णिजे चारूणि चक्रे यदृतैरवर्धत्॥

अर्थात् परमात्मा ने प्रकृति रूपी उपादान कारण से इस संसार को उत्पन्न किया है। प्रकृति से महत्तत्त्व, महत्तत्त्व से अंहकार, अंहकार से पञ्च तन्मात्रा, अर्थात् शब्द, स्पर्श, रूप, रस तथा गन्ध इनसे पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ तथा पाँच कर्मेन्द्रियाँ तथा मन, और पञ्च भूत अर्थात् पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश। महत्तत्त्व को छोड़ कर 21 प्रकृतियों से संसार को उत्पन्न किया है। महत्तत्त्व को इसलिए नहीं गिना है क्योंकि वह एक प्रकार से प्रकृति ही है।

त्रीणि त्रितस्य धारया पृष्ठेष्वेरया रयिम्।

मिमीते अस्य योजना वि सुक्रतुः॥ ऋ.9.102.3

(त्रितस्य धारया) तीनों गुणों की धारणा रूप शील शक्ति से (पृष्ठेषु) इस ब्रमाण्ड में (त्रीणि) तीन प्रकार के भूतों सत्त्व, रजस् और तमस् को (ईरय) प्रेरणा करता हुआ परमात्मा (रयिम्) ऐश्वर्य को (मिमीते) उत्पन्न करता है (सुक्रतुः) शोभन प्रज्ञा वाला परमात्मा (अस्य योजना) इस ब्रह्माण्ड की योजना करता है।

भावार्थ– परमात्मा प्रकृति के सत्व, रजस् और तमस् इन तीन गुणों के द्वारा इस ब्रह्माण्ड की रचना करते हैं प्रकृति जड़ होने के कारण स्वयं सृष्टि उत्पन्न नहीं कर सकती है।

परमात्मा में सृष्टि की उत्पत्ति प्रकृति रूपी उपादान से कैसे की है इस पर ऋग्वेद का कथन है–

ब्रह्मणस्पति रेता सं कर्मारइवा धमत्।

देवानां पूर्व्ये युगेऽसतः सदजायत॥ ऋ.10.72.2

(ब्रह्मणस्पतिः) ब्रह्माण्ड और प्रकृति के स्वामी परमेश्वर ने (एता) इन देव पदार्थों के परमाणुओं को (कर्मारइव) लोहार के समान (सम आधमत्) धोंका अर्थात् ताप से तप्त किया है। (देवानाम्) इन दिव्य पदार्थों के (पूर्व्ये, युगे) पूर्व युग अर्थात् सृष्टि की प्रागवस्था में (असतः) अव्यक्त से (सत्) व्यक्त (अजायत) उत्पन्न होता है।

भावार्थ– प्रकृति के स्वामी परमेश्वर ने प्रकृति के परमाणुओं को लोहार की तरह तपाया है। सृष्टि की रचना में अव्यक्त प्रकृति से व्यक्त सृष्टि उत्पन्न होती है। यही महान् विस्फोट (Big Bang) है।

फिर सृष्टि रचना का क्रम चल पड़ता है। पृथ्वी की उत्पत्ति सूर्य से होती है और उसके पश्चात् ही दिशाएँ उत्पन्न होती हैं।

भूर्जज्ञ उत्तानपदो भुव आशा अजायन्त। ऋ.10.72.4

अर्थात् पृथ्वी सूर्य से उत्पन्न होती है। पृथ्वी से पृथ्वी की दिशा को बताने वाले भेद उत्पन्न होते हैं। परमात्मा सृष्टि की रचना क्यों करता है? इस विषय में कहा गया है–

नाहमिन्द्राणि रारण सख्युर्वृषाकपेर्ऋते।

यस्ये दमप्यं हविः प्रियं देवेणु गच्छति विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः। ऋ.10.86.12

(हे इन्द्राणि) हे प्रकृति शक्ति। (अहम्) मैं परमेश्वर (सख्युः) मित्र (वृषाकपे) जीवात्मा के (ऋते) बिना (न) नहीं (ण) इस जगत् में रमता अथवा इसे व्यक्त करता (यस्य) जिस मुझ परमेश्वर का (इदम्) यह जगत् (अप्यम्) प्रकृति के परमाणुओं से बना हुआ (प्रियम्) प्रिय और (हविः) भोग्य (देवेषु) इन्द्रियों में (गच्छति) व्याप्त होता है अथवा प्राप्त होता है। (इन्द्रः) परमेश्वर (विश्वस्मात्) सब पदार्थों से (उत्तरः) सूक्ष्म और उत्कृष्ट है।

भावार्थ– सृष्टि की उत्पत्ति जीवात्मा के भोग भोगने के लिए की गई है इसी भावना को आगे इस प्रकार व्यक्त किया गया है–

परिप्रिया दिवः कविर्वयांसि नप्त्योर्हितः।

सुवानो याति कविक्रतुः॥ 9.9.1

(कविक्रतुः) सर्वज्ञ (सुवानः) सबको उत्पन्न करने वाला (नप्त्योः हितः) प्रकृति और जीवात्मा का हित करने वाला (कविः) मेधावी (वयांसि) व्याप्तिशील (दिवः प्रिया) द्युलोक का प्रिय (परि, याति) सर्वत्र व्याप्त रहता है। वेद का मानना है कि ज्ञान का प्रारम्भ ईश्वर से ही होता है।

ब्रह्मणस्पते प्रथमं वाचो अग्रं यत्पैरत नामधेयं दधानाः।

यदेषां श्रेष्ठ यदरिप्रमासीत्प्रेणा तदेषां निहितं गुहाविः। ऋ.1071.1

भावार्थ– हे ईश्वर। सृष्टि की उत्पत्ति होने के अनन्तर प्रागवस्था में पवित्र अन्तःकरण वाले पदार्थों का नाम अपने ज्ञान में धारण करने और रखने के योग्य जिस वाणी को ऋषि आपकी प्रेरणा से प्राप्त कर उच्चारण करते हैं। वह जगत् की सब वाणियों का अग्र है। निर्दोष और पूर्ण है। यह ऋषियों के अन्तःकरण में निहित प्रेरणा से प्रकट होती है।

सृष्टि प्रवाह से अनादि है। इसकी उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय का क्रम चलता रहता है वर्तमान सृष्टि भी पूर्व सृष्टि के समान है।

सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत्। ऋ. 10.190.3

वेद की यह भी मान्यता है कि सृष्टि के नियमों का निर्माता परमात्मा ही है। जड़ सृष्टि स्वयं नियम नहीं बना सकती है। सामान्यतया प्रकृति के नियमों में कोई परिवर्तन नहीं होता और न प्रकृति, जड़ होने के कारण, परिवर्तन कर सकती है। परन्तु परमात्मा प्राणियों के हित में प्रकृति के नियमों में परिवर्तन भी कर देता है जैसे कि सामान्य रूप से पदार्थ ताप दिए जाने पर फैलता है और ठंडा करने पर सिकुड़ता है परन्तु परमात्मा ने जल में रहने वाले प्राणियों के हितार्थ इस नियम में परिवर्तन कर दिया है। जल ठंडा किए जाने पर 4°c तक तो सिकुड़ता है परन्तु 4°c से O°c पर ठंडा करने पर फैलता है। इससे शीत प्रधान देशों में ठंड के समय तालाब, सरिता आदि में ऊपर तो पानी जम जाता है परन्तु नीचे पानी 4°c पर ही बहता रहता है इससे पानी में रहने वाले जीव जन्तु सुरक्षित रहते हैं और पानी के अन्दर की वनस्पति भी सुरक्षित रहती है।

ईश्वर का स्वरूप भी यजुर्वेद 40.8 में बता दिया गया है।

सपर्यागच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुद्धमपाप विद्धम्।

कविर्मनीषीपरिभूयम्भूर्याथातथ्यतोऽ अर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः॥

भावार्थ– ब्रह्म शीघ्रकारी, सर्वशक्तिमान्, सूक्ष्म स्थूल और कारण शरीर से रहित, अछेद्य, नाडी, नस आदि के बन्धन से रहित, सदा पवित्र, पाप से रहित और सर्वव्यापक है। वह सर्वज्ञ, अन्तर्यामी, पापियों को दण्ड देने वाला, अनादि स्वरूप प्रजाओं के लिए यथार्थ भाव से वेद के द्वारा सभी पदार्थों का ज्ञान प्रदाता है। परमात्मा निराकार है इसलिए उसकी कोई मूर्ति नहीं बन सकती है।

न तस्य प्रतिमाऽस्ति यस्यनाम महद् यशः॥ यजु. 32.3

वेद की यह भी मान्यता है कि परमात्मा एक ही है।

ओउम् प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव। ऋ. 10.121.10

इसी प्रकार ऋग्वेद में कहा गया है कि परमात्मा एक है परन्तु विद्वान् लोग उसे अलग–अलग नाम से पुकारते हैं।

एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः। ऋ. 1.164.46

वेद की मान्यताओं पर हमने पर्याप्त चिन्तन कर लिया है। अब हम ब्रह्म के विषय में वैज्ञानिकों के विचारों पर चिन्तन करते हैं। सृष्टि उत्पत्ति के विषय में विज्ञान में दो मतों पर विचार किया जाता है। पहला मत अल्फर–बेथ–गेमाका है। जिसके अनुसार विश्व विकसित हो रहा है और दूसरा मत बौण्डी–गोल्डी–होइल का है। जिसके अनुसार विश्व में निरन्तर सृजन प्रक्रिया चल रही है। पहले मत के अनुसार यह विश्व ताप की सघनता और तापमान की उच्च अवस्था से विस्फोट होने के कारण बना है। फ्रिटजाफ काप्रा का कहना है कि विस्फोट के समय यदि इलेक्ट्रोन पर चार्ज थोड़ा कम होता तो विस्फोट फुस्स होकर

शेष पृष्ठ 8 पर ☞

गुरु का वरण

● प्रो. उमाकान्त उपाध्याय

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया,
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः

भारतवर्ष की महिमामयी संस्कृति में, ऋषियों की परंपरा में तीन गुरु माने जाते हैं। "शतपथ ब्राह्मण" में कहा गया है, "मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषोवेद"। मनुष्य का प्रथम गुरु माता है, द्वितीय गुरु पिता है और तृतीय गुरु आचार्य है। माता–पिता का चुनाव संतान के वश में नहीं होता है। सन्तान का चुनाव भी माता–पिता के वश में नहीं होता। किस माता–पिता को कौन सी संतान मिलेगी और किस संतान को कौन से माता–पिता मिलेंगे, यह परम प्रभु परमेश्वर की व्यवस्था से जीवों के कर्मानुसार होता है। संसार में बिना गुरु के (गुरु–विहीन) व्यक्ति तो होते हैं किन्तु बिना माता–पिता के कोई प्राणधारी नहीं होता। अतः मातृमान् और पितृमान् का ऋषियों ने अर्थ बताया है कि वस्तुतः वह संतान वास्तव में माता–पिता वाली है जिसके माता–पिता धार्मिक, विद्वान और मानवता के प्रशंसनीय गुणों से युक्त हों। सो माता–पिता का वरण नहीं किया जाता, वे जीव के कर्मानुसार परमेश्वर की व्यवस्था से प्राप्त होते हैं।

गुरु या आचार्य का चयन या वरण किया जाता है। शिष्य का भी वरण या चयन किया जाता है। न सभी को गुरु बनाया जाता है और न सभी को शिष्य बनाया जाता है। वेद में एक मन्त्र आता है जिसमें गुरु आचार्य के गुणों की व्यवस्था है–

सं पूषन् विदुषा नय, यो अञ्जसानुशासति य एवद मिति ब्रवत् ऋग्. 6–54–1

इस मन्त्र में विद्यार्थी पूषन् परमेश्वर से प्रार्थना करता है, उषादेव पुष्टिदाता परमेश्वर है, पोषण शरीर का तो होता ही है, मन, बुद्धि और चित्त का भी होता है, सामाजिक समरसता, सामंजस्य का भी होता है। गुरुदेव तो मन, मस्तिष्क, बुद्धि, चित्त, चरित्र, आचरण, सबका पोषण करने वाले होते हैं अतः मन्त्र में यह भाव है कि गुरुदेव के पास विद्या की प्राप्ति के लिए, ज्ञान की उपलब्धि के लिए हमारे शरीर, अन्नमय कोष, प्राणमय कोष और मनोमय कोष का सब प्रकार से पोषण होता रहे। मन्त्र में परमेश्वर से प्रार्थना यह की गयी है कि हे पूषन् देव! हमें ऐसे विद्वान् गुरु के पास पहुँचाइए जो– यः अञ्जसा (अनुशास्ति) – जिसकी अध्यापन करने की विधि में सरलता, शीघ्रता हो,"शिष्य सरलता से हृदयंगम कर सकें। कई व्यक्ति स्वयं तो विद्वान् हैं, किन्तु उसमें शिष्यों द्वारा ग्राह्य अध्यापन कला नहीं होती। अध्यापन में संप्रेषणीयता, ज्ञान दान की कला होनी चाहिए।

मन्त्र का तीसरा खंड है – **य एवेदमिति ब्रवत्** – इसका अभिप्राय यह है कि अध्यापक को यह निश्चयात्मक ज्ञान हो कि यह विषय, ज्ञान इतना ही है। ज्ञान का प्रथम पक्ष है सिद्धांत (Theory) और दूसरा पक्ष व्यवहार और प्रयोग (Practice and Working). विषय का सैद्धांतिक ज्ञान अधूरा है जब तक उसका जीवन में प्रयोग, व्यवहार न समझ में आ जाए। विद्या की वास्तविक उपयोगिता व्यवहार और प्रयोग ही है।

मन्त्र का एक बहुत महत्त्वपूर्ण अंश है कि "हे पूषन् देव, पोषण करने वाले प्रभु, हमें विदुषानय, हमें विद्वान, सुविज्ञ गुरु के पास पहुँचिए, विद्या का अदान–प्रदान तभी संभव हो सकेगा जब गुरु और शिष्य एकत्र, एक जगह इक्ट्ठे हों। गुरु शिष्य के एकत्र होने की दो विधिया समझ में आती हैं – एक है शिष्य गुरु के चरणों में श्रद्धा–पूर्वक स्वयं उपस्थित हो गीता में श्री कृष्ण कहते हैं – **"श्रद्धावान् लभते ज्ञानम्, तत्परः संयतेन्द्रियः"** (गीता–4–39). इसका अभिप्राय यह है कि ज्ञान प्राप्त करने के लिए तीन आवश्यक बातें हैं। पहली शर्त यह है की शिष्य में श्रद्धा हो, विद्या प्राप्ति के प्रति श्रद्धा हो और गुरु के ज्ञान, जीवन और चरित्र के प्रति श्रद्धा हो, दूसरी शर्त यह कि शिष्य विद्या प्राप्ति में तत्पर हो। शिष्य के जीवन का उद्देश्य विद्या प्राप्ति हो। तीसरी शर्त है कि विद्यार्थी के जीवन में भोग–विलास के प्रति संयम हो, शिष्य विलासी न हो और तपस्वी हो साथ ही हमारे जीवन में भोग–इन्द्रियों पर नियंत्रण हो हम जिह्वा से स्वाद का भोग करते हैं नाक से सुगंध का, कान से शब्द का, आँख से सुन्दर रूप का और त्वचा से स्पर्श का भोग करते हैं। शिष्य भोग–विलासी न हो, जीवन में संयमी हो, तभी ज्ञान प्राप्त कर सकेगा। शिष्य को सुपात्र, श्रद्धावान और संयमी होना आवश्यक है। एक बड़ी प्रसिद्ध कहावत हैं–

फूलहिं फरहिं न बेंत, जदपि सुधा बरसहिं जलद।
मूरख हृदय न चेत, जो गुरु मिलै बिरंचि सम।

गीता में कहा गया है – **'उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्व दर्शिनः'** (गी. 4–34) अर्थात् तत्त्वदर्शी गुरु लोग ज्ञान का उपदेश देंगे और अध्यापन कला में निपुण गुरु लोग शिष्य के हृदय में ज्ञान को पहुँचा भी देंगे किन्तु शिष्य के लिए आवश्यक है – 'तं विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया' (गी. 4.39) अर्थात् शिष्य को उचित है कि वह गुरु को श्रद्धापूर्वक प्रणाम अर्पित करे, फिर बड़ी नम्रता से गुरु से प्रश्न भी करे, अपनी जिज्ञासाओं का समाधान करवा ले और साथ ही गुरु के प्रति सेवा शुश्रूषा (श्रोतुमिच्छा) की भावना बनाए रखे।

हमने ऊपर यह लिखा था कि गुरु शिष्य के मिलन के, एकत्र होने के दो प्रकार हैं। अब तक हम प्रथम प्रकार की चर्चा कर रहे थे कि शिष्य गुरु के चरणों में श्रद्धा–पूर्वक उपस्थित हो। गुरु शिष्य के मिलन का दूसरा प्रकार है कि गुरु शिष्य के पास पढ़ाने के लिए जाए, यह ट्यूशन पद्धति है। आजकल तो ट्यूशन बहुत प्रचलित हो गया है। अध्यापक रुपयों के पीछे शिष्यों के पास जाते रहते हैं। प्राचीन भारत में, जहाँ तक हम सोचते हैं, एक ही ट्यूटर, दोणाचार्य हुए थे। द्रोणाचार्य ही अपने निर्वाह के लिए भीष्म पितामह के पास पहुँचे थे। इस ट्यूशनी विद्या का बड़ा भारी दुष्परिणाम हुआ था। द्रोणाचार्य ने "अर्थस्य पुरुषो दासः" कहकर अपनी सफाई दी थी और महाभारत के युद्ध में जब तक भीष्म पितामह कौरवों के सेनापति बने रहे तब तक अधर्म युद्ध नहीं हुआ था। जब द्रोणाचार्य सेनापति बने तब ही अधर्म युद्ध आरम्भ हुआ था। द्रोणाचार्य ने द्यूत–क्रीडा के समय, द्रौपदी के वस्त्र–हरण के समय और अत्यंत अन्याय–पूर्वक अभिमन्यु–वध के समय आदि अवसरों पर अन्याय का समर्थन किया था। यह है गुरु का धन, आजीविका–लोभ में शिष्य के नाम जाना, प्रस्तुत मन्त्र में संदेश है कि शिष्य को गुरु के चरणों में उपस्थित होना चाहिए और गुरु के अनुशासन, नियंत्रण में विद्या ग्रहण करना चाहिए और अपने जीवन का निर्माण करना चाहिए।

–पी–30/कालिन्दी हाउसिंग स्टेट
कोलकाता–89

☞ पृष्ठ 3 का शेष

तत्त्व-ज्ञान

रखने के लिए गोदुग्ध का प्रबन्ध अवश्य कर लीजिए और फिर देखिए कि आपके लिए क्या हितकर है। अपनी प्रकृति के अनुकूल खाद्य पदार्थों को चुनने के अतिरिक्त आहार के सम्बन्ध में एक अत्यन्त आवश्यक रहस्य समझ लेना चाहिए और वह यह कि स्वस्थ अवस्था में जब मन खिन्न हो या चन्द्रस्वर चलता हो तो भोजन उदर में विकार उत्पन्न कर देता है।

भोजन–सेवन करते समय मन प्रसन्न होना चाहिए। उस समय चिन्ता की बात मन में न लानी चाहिए, न श्रवण करनी चाहिए, अपितु हास्य–रस की बात होनी चाहिए।

मन को प्रसन्न रखने से स्वास्थ्य

वैसे तो मन को किसी भी समय चिन्ता, क्रोध, पश्चात्ताप, घृणा इत्यादि के दलदल में फँसने नहीं देना चाहिए, क्योंकि ये मानसिक विकार शरीर की नाड़ियों में भारी विक्षोभ उत्पन्न कर देते हैं और रक्त को विषैला बना देते हैं, परन्तु भोजन के समय तो मन का प्रसन्न होना सर्वथा आवश्यक है।

प्रोफैसर गेट्स ने इसके सम्बन्ध में जो वैज्ञानिक प्रयोग किए हैं, वे बड़े लाभदायक हैं। प्रोफैसर गेट्स ने मनुष्य की भिन्न–भिन्न मानसिक अवस्थाओं में निकलने वाले श्वासों की वायु को लेकर हिम द्वारा शीतल की हुई नलियों में एकत्र किया और यह बतलाया कि मनुष्य जब नॉर्मल (साधारण) अवस्था में हो, मन को कोई असाधारण विकार न हो तो उन श्वासों द्वारा रंगहीन द्रव इकट्ठा होता है; और यदि मन क्रोध की अवस्था में हो इस द्रव का रंग भूरा–सा होता है; दुःख की अवस्था में खाकी, पश्चात्ताप की अवस्था में गुलाबी रंग होता है और ये पदार्थ इतने विषैले सिद्ध हुए कि सूअर के बच्चे को इनका टीका लगाने पर वह मृत्यु को प्राप्त हो गया। घृणा तथा क्रोध की अवस्था में एक घण्टे में मनुष्य के श्वास द्वारा इतना विषैला द्रव निकलता है कि उससे बीस व्यक्ति मर सकते हैं। इसके विपरीत आनन्द, उत्साह, प्रेम, प्रसन्नता की अवस्था में श्वास द्वारा जो द्रव निकलता है, वह बड़ा शक्ति देने वाला होता है।

प्रोफैसर गेट्स के इस कथन से सिद्ध होता है कि भिन्न–भिन्न मानसिक अवस्थाएँ मानव–स्वास्थ्य पर कितना गम्भीर प्रभाव डालती हैं। अतएव प्रथम तो क्रोध, घृणा, चिन्ता, सन्ताप इत्यादि से सर्वदा ही बचना चाहिए, परन्तु भोजन के समय तो अवश्यमेव इनको दूर धकेल देना चाहिए। अन्यथा ये भोजन में विष डाल देंगे।

शेष पृष्ठ 6 पर ☞

www.thearyasamaj.org

श्राद्ध की आधुनिक व्याख्या

● सोनालाल नेमधारी

मानव संसार में आता है। एक परिवार में जन्म लेता है। रिश्तों में बँध जाता है। माया के जाल में जकड़ कर रह जाता है। निकलना मुश्किल हो जाता है। इसके लिए वही स्वर्ग लगता है। मगर होता नहीं। समय आता है। कर्म करना पड़ता है। सात जन्मों के कर्मों के फल भी भोगने पड़ते हैं। आवागमन के चक्कर में चक्कर काटना पड़ता है। समय पर बुलावा आता है। सगे सम्बन्धियों को छोड़कर जाना पड़ता है। बच्चे लोग उनकी याद में तपड़ते रहते हैं। ऐसी परम्परा चल पड़ी है कि उनकी याद में साल में एक बार पितृपक्ष आता है। और मृतजनों की याद में श्राद्ध करते हैं। पिण्ड दान करते हैं। पूरे परिवार और पास पड़ोस को बुलाते हैं। सहभोज भी दिया जाता है। उनके नाम पर दान–दक्षिणा देते हैं। पंडित–पुरोहित भी आते हैं, कार्य करते है ऐसे भी सुनने में आता है कि सच्ची श्रद्धा के साथ जीवित माता–पिता और दादा–दादी को उनके जीवित काल में मन लगाकर सेवा करनी चाहिए। उनकी इच्छाएँ पूर्ण करनी चाहिए। वे सन्तुष्ट होकर आशीर्वाद देते हैं तो बच्चों का जीवन सफल हो जाता है। मगर ऐसा बहुत ही कम नज़र आता है। जीवित को भूलाकर मृतक की याद में श्राद्ध करते हैं। अन्न जल, मिष्ठान, फल आदि पदार्थों से उनकी पूजा करते हैं कि यहाँ दिया गया सामान उन्हें मिल जाएगा वे चाहे कहीं पर क्यों न हों। ऐसा पंडितों–आचार्यों का कहना है। शंका समाधान में यह भी बताते हैं कि यदि उनका जन्म किसी दूसरी योनि में हो गया हो कर्म के आधार पर, तब भी वह श्राद्ध का सामान उन तक पहुँच जाता है। यदि मानव तन पाया हो तो सही बात है, वे वस्तुएँ उसी रूप में प्राप्त कर लेंगे। यदि कोई कारणवश कर्मफल के आधार पर पशु–पक्षी या, गाय, बकरी की योनि में जन्मा हो तो हमारा भेजा अन्न उनके खाने के पदार्थ में बदलकर, घास–फूँस के आहार में मिल जाएगा आगे और स्पष्टीकरण करते हैं। हम अपने देश में रहते हैं। हमारा कोई परिवार या घर का सदस्य दूसरे देश में बस गया हो। पढ़ने गया हो या काम पर गया हो तो पैसे की आवश्यकता होती है। हम बैंक द्वारा पैसा भेजते हैं। अपने देश की मुद्रा में ड्राफ्ट करते हैं। और जब विदेश में लोग पैसा निकालेंगे तो वहाँ की मुद्रा, पाउण्ड, डालर या एरो में पैसे मिलेंगे। तो वही हाल श्राद्ध का है। भेजी गई खाद्य सामग्री वहाँ उनकी योनि के अनुरूप में मिल जाएगी। श्राद्ध की यह आधुनिक व्याख्या ग्राह्य है या नहीं। विचारणीय मुद्दा है। एक बात की ओर ध्यान आकर्षित हो ही जाता है कि हम भी तो किसी के माता–पिता होगें गत जन्मों में, वे भी हमारे लिए श्राद्ध करते होंगे। हमें चलकर उन्हें आशीर्वाद देने जाना होगा। कैसे जानेंगे हमारे सगे सम्बन्धी किस दिशा में है कहाँ जाना होगा?

आकाश चूमती दूनिया में काफी बदलाव आया है। आधुनिकता की दौड़ में पुरानी परम्परा भूलते जा रहे हैं। माता–पिता, दादा–दादी पुराने समय में लाख संकट आने पर भी घर में रहते थे। संयुक्त परिवार के जबरदस्त हिस्से होते थे। आज के बड़े परिवार ने सबसे पहले बुजुर्गों को ही बोझ समझकर घर से बाहर निकाल दिया है। वृद्धाश्रम या अनाथालय में जा पटकते हैं। चैन की साँस लेते हैं। चैन की बंसी बजाते हैं। भूल जाते हैं कि उनका बुढ़ापा भी भविष्य के कोने में उनका इन्तज़ार कर रहा है। समस्या तो है घर के सभी जवान–गृहस्थ काम पर जाते हैं। वृद्धों की देखभाल कौन करेगा। कोई है जो देख–रेख के लिए किसी को रख लेता है। उनका तो चल रहा है। बड़ों को अन्तिम घड़ी में भी अनाथ बनकर प्राण छोड़ने पड़ते हैं। मृत शरीर को अन्तिम संस्कार निमित्त लाते हैं। आँसुओं की नदी बहाते हैं। दिखावे के पहाड़ खड़ा कर देते हैं। संवेदना बटोरने का अच्छा मौका मिल जाता है। पितृभक्त की प्रथम श्रेणी में स्थापित हो जाते हैं। परिवार, हित, मित्र, सगे संबंधियों का मेला लग जाता है। पूजा–पाठ करते हैं। सहभोज में बढ़िया से बढ़िया पकवान से लोगों का सत्कार होता है, पंडितों की भी थैली भारी हो जाती है। हर साल वह सिलसिला चलता रहता है। पितृपक्ष का इन्तजार रहता है। 'जियत में घूँसा लात और मरल पर दूध भात' एक पुरानी परम्परा थी। एक कटहा महाराज (पंडित) होता था। वह आता था और मृत व्यक्ति को स्वर्ग पहुँचाने के निमित्त वह दूध पीता था। दूध को गले में लेकर गड़गड़ाता रहता था। और मरे व्यक्ति के सभी सामान माँग लेता था तब दूध गले से नीचे नहीं उतरता था। स्वर्ग का रास्ता खोल देता था। बात यह होती थी पंडित के साथ एक नाई भी जुड़ा होता था। गड़गड़ाते हुए माँगता जाता था। अन्त में दूध पीकर आशीर्वाद देकर गठरी दबाकर चलते बनता था। लोगों को शांति मिलती थी। यह अतीत की बात थी। पितृपक्ष के पन्द्रह दिनों तक आत्माएँ आती हैं। श्राद्ध लेकर आशीर्वाद देकर चली जाती हैं। जो श्राद्ध नहीं करता उसे शाप देकर लौट जाती हैं। एक बात अन्य दिमाग में और खटकती है। ईश्वर के दरबार में सारा मानव समाज उनका अपना है। कोई जाति–पाँति, छोटा बड़ा नहीं है। तो ईश्वर ऐसा क्यों कहते हैं कि हिन्दू की आत्मा को किसी महीने में, मुस्लिम की रूह को किसी और मास में, क्रिश्चियन समुदाय को कभी और छोड़ते हैं, पितृपक्ष में श्राद्ध ग्रहण करने के निमित्त। सभी अपने–अपने ढंग से अनुष्ठान पिण्डदान या तर्पण करते हैं। ऐसा लगता तो नहीं कि यह ईश्वर की व्यवस्था है। अन्य बुद्धि वाले लोगों का करा कराया लगता है।

सचमुच के दुखी परिवार सच्चाई की गहराई में न जाकर जैसा चलता है उसी पर बिना कोई टीका–टिप्पणी किए चलते रहते हैं। पंडित–पुरोहित और आचार्य की बड़ी इज्जत करते हैं। उनकी आज्ञा शिरोधार्य मानते हैं। पता नहीं सही करते हैं या एक परम्परा निभाते जाते हैं। सही की पहचान शायद अभी दूर है। ईश्वर का ही आसरा है। इस आधुनिकता की दौड़ में कहाँ पहुँचेंगे भविष्य ही बताएगा। हमारे पूर्वज किस लोक में वास कर रहे हैं पता नहीं, शायद आकाश में जहाँ सृष्टि विकसित नही हुई है वहीं उनका वास होगा। आधुनिक जगत में कम्प्यूटर पता लगा सकता है।

कारोलिन
बेलयर, मोरिशस

☞ पृष्ठ 5 का शेष

तत्त्व-ज्ञान

भोजन–समय स्वर

भोजन के समय स्वर का ध्यान रखना भी लाभदायक है। जब चन्द्र–स्वर (वाम नासिका से वायु) चल रहा हो तो जठराग्नि मन्द होती है, और भोजन करना चाहिए तीव्र अग्नि में। अन्न पचानेवाली अग्नि तब प्रचण्ड होती है जब सूर्य–स्वर वेग से चलता हो। अतएव भोजन करने से पूर्व देख लीजिये कि सूर्य–स्वर चलता है या नहीं। यदि न चलता हो तो चला लीजिए। इसकी विधि यह है कि वामकुक्षि में अपने दक्षिण हाथ की मुट्ठी रखकर कुक्षि को ज़ोर से दबाएँ या वाम ओर लेट जाएँ। तब सूर्य–स्वर चलने लगेगा। आहार के सम्बन्ध में ये कुछ बातें ध्यान में रखने से शरीर निरोग रहेगा और दृढ़ आसन लगाने के योग्य बन जाएगा।

आहार में छः रस

आहार के सम्बन्ध में एक और तत्त्व की बात लिख देना आवश्यक है और वह छः रसों के सम्बन्ध में है। 'चरक–संहिता' के विमानस्थान के पहले अध्याय में बतलाया गया है कि:

''रस–मधुर, अम्ल, लवण, तिक्त, कटु, कषाय, ये छः हैं। वे भली प्रकार उपयोग को प्राप्त हुए शरीर की पालना करते हैं और उल्टे उपयोग से दोषों को बढ़ाते हैं। दोष तीन हैं – वात, पित्त और श्लेष्मा। ये ठीक हों तो शरीर के उपकारक होते हैं और विकार को प्राप्त हुए हों तो निश्चय से नाना प्रकार के विकारों से शरीर को दुःखित करते हैं।''

तत्र दोषमेकैकं त्रयस्त्रयो रसा जनयन्ति, त्रयस्त्रयश्चोपशमयन्ति। तद्यथा–

कटुतिक्तकषाया वातं जनयन्ति, मधुराम्ललवणास्त्वेनं शमयन्ति। कटुकाम्ललवणाः पित्तं जनयन्ति, मधुरतिक्तकषायाः पुनरेनं शमयन्ति। मधुराम्ललवणाः श्लेष्माणं जनयन्ति, कटुतिक्तकषायास्त्वेनं शमयन्ति।। 4 ।। विमानस्थान पहला अध्याय।।

उसमें से एक–एक दोष को तीन–तीन रस पैदा करते हैं और तीन–तीन उपशमन करते हैं। वे इस प्रकार से हैं:

कटु तिक्त, कषाय –वात को पैदा करते हैं।
मधुर, अम्ल, लवण–वात का शमन करते हैं।
कटु, अम्ल, लवण–पित्त को पैदा करते हैं।
मधुर, तिक्त, कषाय–पित्तकोशान्तकरतेहैं।
मधुर, अम्ल, लवण–श्लेष्माकोपैदाकरतेहैं।
कटु, तिक्त, कषाय–श्लेष्मा को शान्त करते हैं।

मनुष्य–शरीर को योग के अंगों के अनुकूल बनाने के लिए आयुर्वेद के इस तत्त्व को भली प्रकार समझकर प्रयोग में लाइए, निश्चित रूप से आपका शरीर तथा स्वास्थ्य योग के योग्य बन जाएगा।

– क्रमशः –

www.thearyasamaj.org

महर्षि के जीवन में आए दो स्वामी पूर्णानन्द पर विवेचना

● खुशहाल चन्द्र आर्य

मैं ने कल ही महर्षि दयानन्द कृत "संस्कार विधि" जो वैदिक पुस्तकालय, दयानन्दाश्रम, अजमेर से छपी हैं, पढ़ी थी। इसके अन्तिम 5–6 पृष्ठों में महर्षि दयानन्द की संक्षिप्त जीवनी लिखी है। उसमें लिखा है कि स्वामी पूर्णानन्द जिन्होंने स्वामी दयानन्द को संन्यास की दीक्षा की थी, वही स्वामी पूर्णानन्द, स्वामी विरजानन्द, को लगभग तीन साल पढ़ाया था। परन्तु स्वामी सत्यानन्द कृत, स्वामी दयानन्द की जीवनी, जिसका नाम "श्रीमद्दयानन्द–प्रकाश" है। उसको पढ़ने से ज्ञात होता है कि स्वामी दयानन्द को संन्यास को दीक्षा देने वाले स्वामी पूर्णानन्द और स्वामी विरजानन्द के गुरु स्वामी पूर्णानन्द, अलग–अलग दो संन्यासी थे, पर उनका नाम एक ही था। श्रीमद्दयानन्द–प्रकाश में इसी भाँति लिखा है–

यह घटना सन् 1848 की है जब मूलशंकर (महर्षि का जन्म का नाम) सच्चे शिव की खोज में नर्मदा के तट पर घूम रहा था और किसी ब्रह्मचारी ने उसको ब्रह्मचर्य की दीक्षा लेकर उसका नाम ब्र. शुद्धचैतन्य रख दिया था। परन्तु मूलशंकर संन्यास की दीक्षा लेना चाहता था। ब्रह्मचारी रहने में उसको रसोई बनाने व बर्तन माँजने का झंझट रहता था। जिससे उसको योग साधना करने के लिए समय कम मिल पाता था। इसलिए वह सन्यास लेना चाहता था। एक दिन बुद्ध चैतन्य ने किसी से सुना कि चाणेद से डेढ़ कोस के अन्दर जंगल में दाक्षिणात्य दण्डी स्वामी आकर विराजे हैं। वे बड़े विद्वान् उत्तम संन्यासी हैं। उनके साथ एक ब्रह्मचारी भी है। तब बुद्ध चैतन्य जी अपने उपर्युक्त मित्र दक्षिण ी पण्डित को साथ लेकर प्रथसित दण्डी जी की सेवा में उपस्थित हुए और सादर नमस्कार करने के पश्चात् पास बैठकर उन्होंने वार्तालाप करना आरम्भ कर दिया। ब्रह्मविद्या सम्बन्धी अनेक विषयों पर बातचीत होती रही। अन्त में श्री चैतन्य जी को निश्चय हो गया कि दण्डी जी महाराज और सभी ब्रह्मचारी दोनों ब्रह्मविद्या में निपुण हैं। दण्डी जी का शुभ नाम पूर्णानन्द सरस्वती था। शुद्ध चैतन्य जी के हृदय में उनसे संन्यास ग्रहण करने की उत्कट इच्छा उत्पन्न हुई। तब उन्होंने अपने मित्र पण्डित जी को संकेत किया कि दण्डी जी के सम्मुख उनके संन्यास का प्रस्ताव करें। पंडित जी ने निवेदन करते हुए कहा– "दण्डी जी महाराज! यह विद्यार्थी, ब्रह्मचारी शुद्ध चैतन्य, अति सुशील और विनीत है। ब्रह्मविद्या पढ़ने के लिए अतीव उत्कण्ठित है। परन्तु क्या करे भोजन बनाने के बखेड़े ही में इसका बहुत सा समय व्यर्थ व्यय हो जाता है जिससे यथारूचि विद्याध्ययन नहीं कर पाता। इसकी कामना के अनुसार आप कृपा करके इसे चतुर्थ प्रकार का संन्यास दे दीजिये।"

यह प्रार्थना सुनकर, उक्त स्वामी जी ने, शुद्ध चैतन्य जी की भरपूर युवावस्था के कारण उन्हें संन्यास देने से एक बार तो मन हटा लिया। पण्डित जी के अधिक आग्रह से संन्यास को अनुमति देते हुए यह कहा कि यदि ये पूर्ण वैराग्यवान् है तो किसी गुजराती संन्यासी से दीक्षा ले। हम तो महाराष्ट्री हैं। पण्डित जी बोले– "महाराज दक्षिण संन्यासी, गौड़ों को जो पंच द्राविड़ों से बाहर हैं, संन्यास दे देते हैं, तो आप इसे संन्यास क्यों नहीं देते? यह गुर्जर ब्राह्मण है। यह तो जानते ही हैं कि गुर्जर पंच द्राविड़ों में नहीं गिने जाते हैं।" पण्डित जी की अन्तिम युक्ति से दण्डी जी ने संन्यास देना स्वीकार कर लिया और अति प्रसन्नता प्रकाशित करते हुए श्री शुद्ध चैतन्य मुमुक्षु को व्रत उपवास और जपादि क्रियानुष्ठान करने का आदेश दिया।

दो दिन तक जपादि साधनों को यथा विधि करके तीसरे दिन ब्रह्मचारी जी दण्डी जी की सेवा में उपस्थित हुए। उनसे उसी दिन श्राद्ध कराके, दण्डी स्वामी जी ने विधिपूर्वक संन्यास धारण कराया। हाथ में दण्ड अवलम्बन कराकर उनका नाम "दयानन्द सरस्वती" उद्घोषित कर दिया। विनय से नम्रशिर, नव शिष्य को स्वामी पूर्णानन्द जी ने यतियों के धर्म बताए, संन्यास की रीति–नीति का उपदेश दिया। आश्रम–मर्यादा और विद्योपार्जन, जप–तप आदि के करने की शिक्षा दी। वे कई दिन तक गुरु चरणों में बैठकर बड़ी विनम्रता से ब्रह्म विद्या के ग्रन्थ पढ़ते रहे। अब, उन्होंने गुरु–आदेश के अनुसार विद्याराधना को विसर्जन कर दिया। स्वामी पूर्णानन्द शृंगेरी मठ से द्वारिका को जाते हुए मार्ग में कुछ दिनों के लिए "चाणोद" में ठहर गए थे। कुछ दिन पश्चात् जब वहाँ से चलने लगे तो उनके नूतन शिष्य दयानन्द ने बड़ी पूजा और सम्मान से गुरु चरणों में प्रणाम दिया। स्वामी जी महाराज बड़े वात्सल्य भाव को प्रदर्शित करते हुए उनको विदा होकर द्वारिका दर्शन को चल पड़े। स्वामी दयानन्द सरस्वती पीछे कई दिनों तक चाणोद ही में टिके रहे।

कुछ इतिहासकारों का मानना है कि स्वामी पूर्णानन्द जो स्वामी विरजानन्द के गुरु थे। उन्होंने 1857 क स्वतन्त्रता संग्राम में भी काम किया था। यह भी कहा जाता है कि सन् 1856 में .... मथुरा के जंगल में एक बड़ी सभा स्वतन्त्रता–संग्राम की योजना बनाने के लिए हुई थी। उसमें उत्तर भारत के काफी राजा–महाराजा, नबाब–बादशाह तथा हरियाणा की खाप पंचायत ने भाग लिया था। उसकी अध्यक्षता प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द जी ने की थी। उसमें स्वामी विरजानन्द द्वारा जोशीला भाषण दिया था। जिससे स्वतंत्रता–संग्राम का काम आरंभ हो गया। कुछ लोगों का यह भी कहना है कि स्वामी दयानन्द ने अज्ञातवास के रूप में अपना नाम उजागर किए बिना, छिपकर भाग लिया था। तभी उनको स्वामी पूर्णानन्द का पता चला और उनसे स्वामी जी ने अनुरोध किया कि आप मेरे गुरु बन कर मुझे पढ़ाएँ। परन्तु स्वामी पूर्णानन्द ने अपनी वृद्धअवस्था बतलाकर पढ़ाने के लिए असमर्थता प्रकट की और स्वामी विरजानन्द जो उनके शिष्य थे, उनके पास स्वामी दयानन्द को पढ़ने के लिए मथुरा भेज दिया। परन्तु श्रीमद्दयानन्द–प्रकाश में ऐसा कुछ नहीं लिखा। उसमें इसी भाँति लिखा है।

ब्र. शुद्ध चैतन्य सन् 1848 में स्वामी पूर्णानन्द से संन्यास की दीक्षा लेकर और अपना नया नाम "स्वामी दयानन्द" रखकर, हरिद्वार होते हुए उत्तराखण्ड की ओर विदारघाट चले गए। वहाँ गंगागिरि, रूद्र, शिवपुरी, गुप्त काशी, गौरी कुण्ड, ओखीमठ जोशीमठ, आदि स्थानों पर घूमते हुए तथा अनेक दुःख व कष्टों को सहन करते हुए सन् 1857 में मुरादाबाद आ गये। यहाँ से स्वामी जी पुनः नर्मदा नदी के तट पर चले गए और वहाँ अच्छे–अच्छे साधु–सन्तों, संन्यासी–महात्माओं से मिलते हुए सच्चे विरजानन्द गुरु की खोज में घूमते रहे। स्वामी जी वहीं लगभग तीन साल रहे और वहीं उन्होंने लोगों से स्वामी बिरजानन्द का विमल–यश श्रवण किया और फिर विशेष ज्ञान की प्राप्ति की जिज्ञासा से स्वामी दयानन्द, स्वामी विरजानन्द से मिलने के लिए मथुरा आ पहुँचे।

इस लेख में लेखक ने दोनों के पक्ष ही लिख दिए हैं, पर सही श्री मद्दयानन्द–प्रकाश का ही लगता है। आर्य जगत् के अधिकतर विद्वान् जिनमें पूज्य डॉ. भवानी लाल जी भारतीय और पूज्य राजेन्द्र जी जिज्ञासु मुख्य हैं जो स्वामी दयानन्द के तीन साल के अज्ञातवास को और स्वामी जी ने सन् 1857 के स्वतन्त्रता–संग्राम में भाग लिया, ऐसा नहीं मानते हैं। श्री मद्दयानन्द–प्रकाश के आधार पर स्वामी पूर्णानन्द का एक ही व्यक्ति होना असम्भव प्रतीत होता है। महर्षि की जीवनी पढ़ने से ज्ञात होता है कि पहला पूर्णानन्द दक्षिण भारत का द्रविण ब्राह्मण है, जिसकी उम्र अधिक नहीं जान पड़ती दूसरा पूर्णानन्द उत्तर भारत का संन्यासी है जो 108 वर्ष का वृद्ध है। इसका अन्दाजा इसी से लगता है कि जब स्वामी दयानन्द, स्वामी विरजानन्द जी के पास पहुँचे थे, तब स्वामी बिरजानन्द की आयु 90 वर्ष की थी। इसलिए यह निश्चित ही समझना चाहिए कि दोनों पूर्णानन्द अलग–अलग संन्यासी थे।

यहाँ यह लिखना भी उचित है कि यदि स्वामी दयानन्द और स्वामी बिरजानन्द का एक ही गुरु स्वामी पूर्णानन्द होता, तो स्वामी दयानन्द अपने गुरु बिरजानन्द के पास लगभग तीन साल रहे थे तब कभी तो अपने गुरु के बारे में परस्पर बातचीत भी होती। परन्तु ऐसी वार्त्ता का जिक्र इन तीन सालों की अवधि के बीच कभी नहीं आया। इसलिए इन दोनों के गुरु अलग–अलग ही थे। यही मानना उचित है।

180 महात्मा गांधी रोड (दो तल्ला)
कोलकता – 700007
मो. 9836135794

www.thearyasamaj.org

☞ पृष्ठ 4 का शेष

'ईश्वर' वेद और विज्ञान....

रह जाता और सृष्टि की उत्पत्ति नहीं होती और यदि विस्फोट के समय इलेक्ट्रोन पर चार्ज अधिक होता तो विस्फोट इतना भयंकर होता कि कुछ ही क्षण में सब कुछ अनन्त में समा जाता और फिर भी सृष्टि की उत्पत्ति नहीं होती। इससे लगता है कि किसी अन्यतम बुद्धि सम्पन्न शक्ति ने योजनाबद्ध ढंग से विस्फोट किया जिससे इलेक्ट्रोन पर उतना ही चार्ज उत्पन्न हुआ जितना कि सृष्टि की उत्पत्ति के लिए आवश्यक था साथ ही विस्फोट शक्ति निराकार थी क्योंकि कोई भी शरीर धारी विस्फोट के ताप को सहन नहीं कर सकता था। वर्तमान युग में भौतिकी के वैज्ञानिकों में Stephen Hawking की बड़ी प्रसिद्धि है। उन्होंने अपनी पुस्तक A Brief History of Time के अध्याय Origin and Fate of the Universe के अन्तिम पेराग्राफ में लिखा है– With the success of scientific theories in describing events, most people have come to believe that God allows the universe to evolve according to a set of laws and does not intervene in the universe to break these laws. However the laws do not tell us what the universe should have looked like when it started. It would be up to God to wind up clockwork and choose how to start it off. So long as the universe had a beginning, we would suppose it had a creator. But if the universe is really completely self contained having no bound or edge, it would have neither beginning nor end. It would simply be, the place for a creator. घटनाओं का वर्णन करने वाले विज्ञान के नियमों की सफलता के साथ अधिकांश व्यक्ति यह विश्वास करने लगे हैं कि परमात्मा सृष्टि को कुछ नियमों के अनुरूप उत्पन्न होने देता है, विकसित होने देता है।तो सृष्टि के बीच में इन नियमों को तोड़ने के लिए दखल नहीं देता है। फिर भी यह नियम हमें यह नहीं बताते कि जब यह सृष्टि आरम्भ हुई तब कैसी दिखती थी। यह तो ईश्वर पर ही निर्भर है कि वह कैसे घड़ी की तरह चलाए और यह चुने कि उसका अन्त कैसे हो? जहाँ तक सृष्टि के उत्पन्न होने की मान्यता है वहाँ तक हमें मानना होगा कि इसका कोई निर्माता है। परन्तु यदि सृष्टि वास्तव में अपने आप में पूर्णरूप से अपने आप में समाई हुई है और उसकी कोई सीमा या अन्त नहीं है तो न तो इसकी उत्पत्ति होगी और न अन्त होगा। तब निर्माता के लिए कौन सा स्थान होगा? परन्तु अब यह सिद्ध हो चुका है कि सृष्टि की उत्पत्ति Big Bang के साथ हुई है। सन् 1929 में एडविन हुब्बल ने आकाश की खोज करके यह सिद्ध कर दिया है कि सृष्टि फैल रही है और जो Galaxy निहारिका मंडल हमसे जितना अधिक दूर है उतनी तेजी से वह हमसे दूर भाग रही है। उसने यह भी ज्ञात कर लिया है कि कोलन सी Galaxy हमसे किस गति से दूर हट रही है और उस निहारिका मंडल की हमसे कितनी दूरी है। अब माना यह जाता है कि सृष्टि उत्पत्ति से पूर्व सब कुद नजदीक था तो फिर यह निहारिका मंडल कितने समय पूर्व हमसे अगल हुआ। वही समय सृष्टि उत्पत्ति का होगा। फिर सृष्टि की आयु निकालने का एक सूत्र भी उसने दिया। V=HR यहाँ V निहारिका मंडल के दूर भागने की गति है, R निहारिका मंडल की पृथ्वी से दूरी है। अब यदि दूसरी में गति का भाग दे दें तो सृष्टि   वर्ष 10^d लाख प्रकाश वर्ष की निहारिका मंडल पृथ्वी से 19^d मील की गति से दूर भाग रही है। अब सृष्टि की आयु निकालना सरल है। अब चूँकि स्वयं Hawking ने स्वीकार लिया है कि सृष्टि की उत्पत्ति होने के पश्चात् परमात्मा उसके अथवा जीवात्मा के कार्यों में दखल नहीं देता है। वह तटस्थ होकर देखता रहता है–

तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्यो अभि चाक शीति। ऋ. 1.164.20

फिर हाकिंग का कहना है कि फैलती हुई सृष्टि एक निर्माता को अलग नहीं करती परन्तु उस पर एक पाबन्दी लगा देती है कि सृष्टि कब उत्पन्न हुई।

अब हम अन्य वैज्ञानिकों के मतों पर भी विचार करते हैं। जान क्वीवलैण्ड कोथरान लिखते हैं, 'यह भौतिक प्रपञ्च अपनी रचना अथवा नियमों की रचना अपने आप नहीं कर सकता है। इसलिए सृष्टि रचना का यह कार्य किसी अभौतिक माध्यम के द्वारा ही होना चाहिए। इस कार्य में जो विशाल चमत्कार दृष्टिगोचर होते हैं उनसे यह पता लग जाता है कि उस माध्यम में सर्वोत्कृष्ट बुद्धि होनी चाहिए जो केवल चेतना का गुण है। इसका अर्थ यह है कि बिना किसी संकोच के हम सर्वोच्च आत्मतत्त्व ब्रह्म, विश्व के रचयिता और नियामक, के अस्तित्व के तथ्य को स्वीकार करते हैं।'

आइसोटोप विशेषज्ञ डा. पाल क्लेरेन्स लिखते हैं, 'किसी भी दृष्टि से परमात्मा भौतिक पदार्थ नहीं है। यही कारण है कि भौतिक ढंग से उसकी व्याख्या करना मानव क्षमता के बाहर है।...... जो एक बात हम जानते हैं कि वह यह मानव और यह विश्व सर्वथा नास्ति से अस्ति में नहीं आ गया है। ये दोनों सादि हैं और उनका एक आदि रचयिता भी होना चाहिए।

डा. जार्च अर्ल डेविस लिखते हैं, कोई भी जड़ पदार्थ अपने आपको उत्पन्न नहीं कर सकता। ...... मैं ऐसे परमात्मा के विषय में विचार करना पसंद करता हूँ जिसने इस चराचर जगत् को उत्पन्न तो किया है परन्तु वह स्वयं यह जगत् नहीं है। ... कोई सृजन जितने ऊँचे परिणामवादी विकास की ओर ले जाता है उस सृजन के पीछे सर्वोच्च बुद्धि की उत्पत्ति ही प्रबल होती है। वे ईश्वर को जगत् का निमित्त कारण मानते हैं जो वेदों के अनुरूप ही है।

डा. जान इडोल्फ ब्यूलर, व्याख्याता, एण्डरसन महाविद्यालय, लिखते हैं, प्रकृति के नियमों की खोज करके मनुष्य अज्ञेय की व्याख्या करने में समर्थ हो सकता है। परन्तु प्रकृति के नियमों को पैदा करने में कभी समर्थ नहीं हो सकता है। परमात्मा नियम प्रदान करता है। मनुष्य उन नियमों की खोज करता है, और धीरे–धीरे प्रकृति की व्याख्या करना सीखता है। वह प्रत्येक नियम जिसकी मनुष्य खोज करता है मनुष्य को परमात्मा को समझने के और निकट ले जाता है। परमात्मा हम पर अपने आपको प्रकट करने के लिए यही तरीका अपनाता है। अपने आपको प्रकट करने का यही तरीका नहीं है किन्तु यह महत्त्वपूर्ण है। अनुभूति के आधार पर परमेश्वर की सत्ता की स्वीकृति भी वैसी ही है जैसी कि परमाणु की रचना की स्वीकृति। हम में से किसी ने भी किसी भी तत्त्व के परमाणु को नहीं देखा है। परमाणु के अन्दर के सूक्ष्म कणों और उतने ही उनके विलोम कणों का भी हमने दर्शन नहीं किया है फिर भी वैज्ञानिकों के कथन को स्वीकार कर लेते हैं क्योंकि वे उस विषय के पण्डित हैं, इसी प्रकार डाक्टर जब तक मस्तिष्क में न्यूरोन्सक कार्यों का वर्णन करते हैं तो हम उसे भी स्वीकार कर लेते हैं क्योंकि डाक्टर ने कहा है। इसको ध्यान में रखकर डा. मार्टिन ग्रान्ट स्मिथ लिखते हैं, हर एक युग के साक्षर अथवा निरक्षर जिसमें वैज्ञानिक भी सम्मिलित हैं। उन लाखों लोगों की साक्षी है कि हमने अपनी आत्मा में ईश्वर की सत्ता का अनुभव किया है। हम उस साक्षी का क्या करें? क्या उसे परे फेंक दे? उनकी उपेक्षा कर दें।

अब हम चार अन्य अत्यन्त प्रसिद्ध वैज्ञानिकों के विचार पाठकों के सम्मुख रखकर विषय को विराम देना चाहते हैं। These things being rightly despatched does it not appear from phenomena that there is a supreme being in comporal living intelligent omnipresent who in infinite space sees the things himself intimately and thoroughly perceives them and comprehends them, wholly by their immediate presence to himself.

(Optics by Sir Newton page 344)

सर ओलिवर लाज अपने समय में बड़े वैज्ञानिक थे। वे British Royal Society के प्रधान थे। उन्होंने एक निबन्ध में लिखा है– We are deaf and dumb to the infinite grandeur around us unless we have insight to appreciate the whole and so to recognise the woven fabric of existence flowing steadily from the loom in an infinite progress towards perfection the evergrowing garment of a transendent God.

अर्थात् हम अपने चारों और जो असीम सौन्दर्य देख पाते हैं उसके विषय में बहरे और गूँगे रहते हैं जब तक कि हमारे अन्दर समस्त जगत् के महत्त्व को समझने और उसके अन्दर ओत–प्रोत सर्वव्यापक परमेश्वर की सत्ता को स्वीकार करने की आन्तरिक बुद्धि और दृष्टि न हो।

प्रसिद्ध वैज्ञानिक लुई पाश्चर का प्रातः स्मरणीय वाक्य है–

'Posterity will one day laugh at the foolishness of the modern materialistic philosophers. The more I study nature, the more I stand amused at the works of the creator.'

अन्त में अब हम आइन्स्टाइन के लेख का उदाहरण देते हैं– 'I believe in God who reveals himself in the orderly harmony of the universe. I believe that intelligence manifested through our nature. The basis of all scientific work is the conviction that the world is an ordered and comprehensive entity and not a thing of chance.' (Science and the idea of God by W.M. Ernest Hacking)

'अर्थात् मैं ईश्वर की सत्ता में विश्वास रखता हूँ जो अपने को जगत् की व्यवस्थित सत्ता के रूप में प्रकट कर रहा है। मैं यह विश्वास रखता हूँ कि सारी प्रकृति के अन्दर एक बुद्धिमत्ता प्रकट हो रही है। सारे वैज्ञानिक कार्य का आधार यह विश्वास ही है कि संसार एक व्यवस्थित सत्ता है न कि आकस्मिक वस्तु।' पाठक इस छोटे से लेख से अनुभव करेंगे कि ईश्वर के विषय में वेद और विज्ञान के दृष्टिकोण में बड़ी समानता है। इति।

73, शास्त्री नगर, दादाबाड़ी
कोटा (राजस्थान)
पिन नं. 324009

गायों का महत्व

● आचार्य आनन्द पुरुषार्थी

पहले आप सब ये जान लें कि भारत में 3600 क़त्लखाने ऐसे हैं जिनके पास गाय काटने का लाइसेन्स है। इसके अलावा 36000 क़त्लखाने गैर कानूनी चल रहे हैं। प्रतिवर्ष ढाई करोड़ गायों का क़त्ल किया जाता है। एक से सवा करोड़ भैंसों का, और 2 से 3 करोड़ सूअरों का, बकरे–बकरियाँ, मुर्गे–मुर्गियाँ आदि छोटे जानवरों की संख्या भी करोड़ों में है, गिनी नहीं जा सकती है। तो भारत एक ऐसा देश बन गया है जहाँ क़त्ल ही क़त्ल होता है।

तो ये सब जब उनको सहन नहीं हुआ तो सन 1998 में राजीव भाई और राजीव भाई जैसे कुछ समविचारी लोगों ने सुप्रीम कोर्ट में मुकदमा किया। एक संस्था है, 'भारत में अखिल भारतीय गौ सेवक संघ' जिससे राजीव भाई जुड़े हुए थे और इस संस्था का मुख्य कार्यालय जो कि राजीव भाई के शहर वर्धा में ही है। एक दूसरी संस्था है उसका नाम है 'अहिंसा आर्मी ट्रस्ट' तो दोनों ने सुप्रीम कोर्ट में मुक़दमा दाखिल किया और बाद में पता चला कि गुजरात सरकार भी मुक़दमें में शामिल हो गई।

सुप्रीम कोर्ट में मुक़दमा किया गया कि गाय और गौ वंश की हत्या नहीं होनी चाहिए। तो सामने बैठे कसाई लोगों ने कहा क्यों नहीं होनी चाहिए? जरूर होनी चाहिए। राजीव भाई की तरफ से सुप्रीम कोर्ट में अपील की गई कि ये एक–दो जज का मामला नहीं है। इसमें बड़ी बैंच बनाई जाए। 3–4 साल तो सुप्रीम कोर्ट ने स्वीकार नहीं किया बाद में मान लिया कि चलो इसके लिए constiutional bench बनाई जाएगी। भारत के थोड़े दिन पहले चीफ जस्टिस रहे श्री आर.सी लाहोटी ने अपनी अध्यक्षता में 7 जजों की एक constiutional bench बनाई जिससे 2004 से सितम्बर 2005 तक मुकदमे की सुनवाई चली।

कसाईयों की तरफ से लड़ने वाले भारत के सभी बड़े–बड़े वकील जो 50–50 लाख तक फीस लेते हैं सभी कसाईयों के पक्ष में थे। राजीव भाई की तरफ से लड़ने वाला कोई बड़ा वकील नहीं क्योंकि फीस देने को इतना पैसा नहीं। राजीव भाई ने अदालत से कहा कि हमारे पास तो कोई वकील नहीं है तो क्या करेंगे? तो अदालत ने कहा कि हम अगर आपको वकील दे? तो राजीव भाई ने कहा बड़ी मेहरबानी होगी या फिर आप हमें ही बहस का मौका दे दे तो भी बड़ी मेहरबानी होगी। तो उन्होंने कहा कि हाँ आप ही बहस कर लीजिए हम आपको एम इ एस्क्युरी देंगे यानी कोर्ट के द्वारा दिया गया वकील। केस लड़ना शुरू किया।

मुक़दमे में कसाईयों द्वारा गाय काटने के लिए वही सारे कुतर्क रखे गए जो कभी शरद पवार द्वारा बोले गए या इस देश के ज्यादा पढ़े लिखे लोगों द्वारा बोले जाते हैं। जो देश के पहले प्रधानमंत्री नेहरू द्वारा कहे गए थे।

कसाईयों का पहला कुतर्क!!

(1) गाय जब बूढ़ी हो जाती है तो बचाने में कोई लाभ नहीं उसे कत्ल करके बेचना ही बढ़िया है। हम भारत की अर्थ व्यवस्था को मजबूत बना रहे हैं क्योंकि गाय का मांस export कर रहे हैं।

दुसरा कुतर्क

(2) भारत में गाय के चारे की कमी है। भूखी मरे इससे अच्छा ये है कि हम उसका कत्ल करके बेचें!

तीसरा कुतर्क

(3) भारत में लोगों को रहने के लिए जमीन नहीं है गाय को कहाँ रखें?

चौथा कुतर्क

(4) इससे विदेशी मुद्रा मिलती है!

और सबसे खतरनाक कुतर्क जो कसाईयों की तरफ से दिया गया कि गाय की हत्या करना हमारे धर्म इस्लाम में लिखा हुआ है कि हम गायों की हत्या करें। (this is our religious right) कसाई लोग कौन हैं? आप जानते हैं? मुसलमानों में एक कुरैशी समाज है जो सबसे ज्यादा जानवरों की हत्या करता है उनकी तरफ से ये कुतर्क आए।

राजीव भाई की तरफ से बिना क्रोध प्रकट बहुत ही धैर्य से इन सब कुतर्कों का तर्कपूर्वक जवाब दिया गया।

उनका पहला कुतर्क था मांस बेचते हैं तो आमदनी होती है देश को! तो राजीव भाई ने सारे आंकड़े सुप्रीम कोर्ट में रखे कि एक गाय को जब काट देते हैं तो उसके शरीर में से कितना मांस निकलता है? कितना खून निकलता है? कितनी हड्डियाँ निकलती हैं?

एक स्वस्थ गाय का वज़न 3 से साढे तीन क्विंटल होता है। उसे जब काटें तो उसमें से मात्र 70 किलो मांस निकलता है। एक किलो गाय का मांस जब भारत से export होता है तो उसकी कीमत है लगभग 50 रुपए। तो 70 किलो का 50 से गुणा करने पर 70×50= 3500 रुपए होता है।

खून जो निकलता है वो लगभग 25 लीटर होता है। जिससे कुल कमाई 1500 से 2000 रुपए होती है। फिर हड्डियाँ निकलती हैं वो भी 30–35 किलो हैं। जो 1000–1200 के लगभग बिक जाती हैं। तो कुल मिलाकर एक गाय का जब क़त्ल करें और मांस, हड्डियाँ खून समेत बेचें तो सरकार को या क़त्ल करने वाले कसाई को 7000 से ज्यादा नहीं मिलता!!

फिर राजीव भाई द्वारा कोर्ट के सामने उल्टी बातें रखी गईं यदि गाय को क़त्ल न करें तो क्या मिलता है? हमने क़त्ल किया तो 7000 मिलेगा और इसको जिंदा रखें तो कितना मिलेगा? तो उसका calculation ये है।

एक स्वस्थ गाय एक दिन में 10 किलो गोबर देती है और ढाई से 3 लीटर मूत्र देती है। गाय के एक किलो गोबर से 33 किलो fertilizer (खाद) बनती है। जिसे organic खाद कहते हैं। तो कोर्ट के जज ने कहा how it is possible?

राजीव भाई द्वारा कहा गया आप हमें समय दीजिए और स्थान दीजिए हम आपको यही सिद्ध करके बताते हैं। जब कोर्ट ने आज्ञा दी तो राजीव भाई ने उनको पूरा करके दिखाया। और कोर्ट से कहा कि आई.आर.सी. के वैज्ञानिक को बुला लो और टेस्ट करा लो। तो गाय का गोबर कोर्ट ने भेजा टेस्ट करने के लिए। तो वैज्ञानिकों ने कहा कि इसमें 18 micronutrients (पोषक तत्त्व) हैं। जो सभी खेत की मिट्टी को चाहिए। जैसे मैगनीज है, फोस्फोरस है, पोटाशियम है, कैल्शियम, आयरन, कोबाल्ट, सिलिकोन, आदि आदि। रासायनिक खाद में मुश्किल से तीन होते हैं। तो गाय का खाद रासायनिक से 10 गुना ज्यादा ताकतवर है यह तर्क कोर्ट ने माना।

राजीव ने कहा अगर, आपके प्रोटोकाल के खिलाफ न जाता हो तो आप चलिए हमारे साथ और देखें कहाँ–कहाँ हम 1 किलो गोबर से 33 किलो खाद बना रहे हैं राजीव भाई ने कहा मेरे अपने गाँव में मैं बनाता हूँ। मेरे माता पिता दोनों किसान हैं पिछले 15 साल से हम गाय के गोबर से ही खेती करते हैं। 1 किलो गोबर है तो 33 किलो खाद बनता है। और 1 किलो खाद का जो अंतर्राष्ट्रीय बाजार में भाव है वो 6 रुपए है। तो रोज 10 किलो गोबर से 330 किलो खाद बनेगी। जिसे 6 रुपए किलो के हिसाब से बेचें तो 1800 से 2000 रुपए रोज का गाय के गोबर से मिलता है।

और गाय के गोबर देने में कोई sunday नहीं होता weekly off नहीं होता। हर दिन मिलता है। तो साल में कितना? 1800 का 365 से गुणा कर लो। गाय की सामान्य उम्र 20 साल है और वो जीवन के अंतिम दिन तक गोबर देती है अगर 1800 गुना 365 गुना 20 कर लें तो 1 करोड़ से ऊपर तो मिल जाएगा केवल गोबरर से।

हजारों लाखों वर्ष पहले हमारे शास्त्रों में लिखा है कि गाय के गोबर में लक्ष्मी जी का वास है। मैकोले के मानस पुत्र जो आधुनिक शिक्षा से पढ़कर निकले हैं जिन्हें अपना धर्म, संस्कृति–सभ्यता सब पाखंड ही लगता है। हमेशा इस बात का मजाक उड़ाते हैं कि गाय के गोबर में लक्ष्मी? तो यह उन सबके लिए हमारा उत्तर है। क्योंकि ये बात सिद्ध होती है कि गाय के गोबर से खेती कर, अनाज उत्पादन कर धन कमाया जा सकता है और पूरे भारत का पेट भरा जा सकता है।

अब बात करते हैं मूत्र की। रोज का 2–सवा दो लीटर तो होता ही है। इससे औषधियाँ बनती है diabetes की, औषधि बनती है arthritis की औषधि बनती है bronkitis, bronchial asthma, tuberculosis, osteomyelities की, ऐसे करके 48 रोगों की औषधियाँ बनती हैं। गाय के एक लीटर मूत्र की बाजार में दवा के रूप में कीमत 500 रुपए है। वो भी भारत के बाजार में। अंतर्राष्ट्रीय बाजार में तो इससे भी ज्यादा है। आपको मालूम है? अमेरिका में गौ मूत्र patent है। और अमरीकी सरकार हर साल भारत से गाय का मूत्र import करती है और कैंसर की medicine बनाते हैं, diabetes की दवा बनाते हैं, और अमेरिका में गौ मूत्र पर एक दो नहीं तीन patent हैं। तो गाय के मूल से लगभग रोज की 3000 की आमदनी बनती है।

एक साल का 3000×365=1095000

20 साल का 300×365×20=21900000

इतना तो गाय के गोबर और मूत्र से ही हो गया एक साल का

इसी गाय के गोबर से एक गैस निकलती है जिसे मैथेन कहते हैं। मैथेन वही गैस है जिससे आप अपने रसोई घर का सिलेंडर चला सकते हैं और जरूरत पड़ने पर 4 पहियों वाली गाड़ी भी चला सकते हैं।

जैसे LPG गैस से गाड़ी चलती है वैसे मैथेन गैस से भी गाड़ी चलती है। जब न्यायाधीश को विश्वास नहीं हुआ। तो राजीव भाई ने कहा अगर आप आज्ञा दें तो आपकी कार में मेथेन गैस का सिलेंडर लगवा देते हैं आप चला के देख लीजिए। उन्होंने आज्ञा दी और राजीव भाई ने सिलेंडर लगवा दिया। जब जज साहब ने 3 महीने गाड़ी चलाई तब उन्होंने कहा its excellent! क्योंकि खर्चा आता है मात्र 50 से 60 पैसे किलोमीटर और डीजल से आता है 4 रुपए किलोमीटर। मैथेन गैस से गाड़ी चले तो धुआँ बिल्कुल नहीं निकलता। डीजल गैस से चले तो धुआं ही धुआं। मैथेन से चलने वाली गाड़ी में

शेष पृष्ठ 11 पर

www.thearyasamaj.org

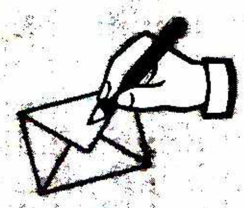

पत्र/कविता

उसने कहा था.. सच कहा था।

सुकरात ने कहा था–
सत्य का दीप जलाओ, अज्ञान को दूर भगाओ
और लोगों ने उन्हें जहर का प्याला पिला दिया।

गैलेलियो ने कहा था–
पृथ्वी सूर्य के चक्कर लगाती है, सूर्य पृथ्वी का नहीं
और लोगों ने उन्हें ईशनिन्दक कहकर फासी पर लटका दिया।

ईसा ने कहा था–
परमेश्वर का रास्ता प्रेम और करुणा का है, आओ सबसे प्रेम करे
और जालिमों ने उन्हें सूलों पर चढ़ा दिया।

लिंकन ने कहा था–
सभी मनुष्य ईश्वर की संतान हैं–गोरा हो या काला
और लोगों ने उन्हें गाली मार दी।

मार्टिन लूथर किंग ने कहा था–
प्रभु से सीधे संवाद करो, पोप की ठग विद्या व प्रपंच से बचो
और लोगों ने उनकी जान ले ली।

दयानन्द ने कहा था–
वेदों के सत्य–पथ पर चलो और धार्मिक कठमुल्लों से बचो
और लोगों ने उन्हें दूध में संखिया देकर मरवा डाला।

भगत सिंह ने कहा था–
फिरंगी! मेरी मातृभूमि को आजाद करो और यहाँ से चले जाओ
और उन्हें फांसी के फंदे पर झुला दिया गया।

गांधी ने कहा था–
सत्य–अहिंसा पर चलो, धर्म के नाम पर नफरत न करो
और एक धर्मान्ध ने उनके सीने में गोली मारकर हत्या कर दी।

नरेन्द्र दाभोलकर ने कहा था–
अंधश्रद्धा, भूत–प्रेतों, जादू–टोनों से बचो
चमत्कारी तथा तात्रिक बाबाओं के चंगुल में न फंसो
और उन्हें सरे राह गोलियों से भून दिया गया।

जब भी किसी दिव्य आत्मा ने इंसानियत के हक में कुछ कहा
दुनिया ने उसे न सुना न सहा
बाद में पश्चाताप के आंसू बहाकर कहा...
उसने जो कहा था सच कहा था।

बालकृष्ण गुप्त
सेवानिवृत्त संयुक्त कलेक्टर
खेड़ापति कालोनी, ग्वालियर
मो. नं. 09425337965

वैदिक धर्म की खातिर मरना इन्हें सिखा दे

एक मास तक कनाडा में प्रचार यात्रा करके, इंग्लैण्ड पहुंचा। यहां पर भी लन्दन, लैस्टर, नौटिंगघम, ब्रिस्टॅल, बर्मिंघम ग्रेट यार माउथ, ग्रांथम् आदि नगरों के समाजों, मंदिरों, रा. स्व.आदि में प्रवचन, यज्ञ शंका समाधान आदि कार्यक्रम चल रहे हैं। शेष समय में लेखन कार्य चलता रहा है।

विगत 12–13 वर्षों में विश्व के पूर्वीय तथा पाश्चात्य महाद्वीपों के दर्जनों देशों की यात्रा की और इनके इतिहास, संस्कृति, सभ्यता, आचार–विचार तथा परम्पराओं तथा वर्तमान की स्थितियों को पत्यक्ष देखने, सुनने व पढ़ने का सुअवसर मिला और ज्ञान की वृद्धि हुई। इतना भ्रमण करने के पश्चात् एक तथ्य सर्वत्र दृष्टिगोचर हुआ कि व्यक्ति हो या परिवार, समाज हो या राष्ट्र, जहां आगे बढ़ने, ऊंचा उठने, सामर्थ्यवान बनने व शक्ति सम्पन्न होने , संगठित रहने और अनुशासन का पालन करने व त्याग तपस्या युक्त पुरुषार्थ करने की प्रबल इच्छा है वहां उन्नति प्रगति होती रहती है। इसके विपरीत जहां इन गुणों के विपरीत निराशा, आलस्य, प्रमाद, लापरवाही, निर्बलता, विगठन, स्वच्छन्दता, भोग, स्वार्थ, अभिमान, द्वेष आदि अवगुण विद्यमान होते हैं, विकास, उन्नति अवरुद्ध हो जाती है। कालान्तर में अवनति तथा विनाश हो जाता है।

आर्यावर्त में विक्रमादित्य के उत्तरवर्ती काल में एक हजार वर्ष तक पाश्चात्य क्रूर, हिंसक अन्यायी, अत्याचारी, घोर पक्षपाती, छद्मी चतुर चालाक शासकों से पराधीन, प्रताडित, शोषित, दण्डित भारतीयों के मन में हीनता की मानसिकता बन गयी है और अज्ञान, अभाव, अन्याय से युक्त, परिस्थितियों के दास बनकर, भाग्य के भरोसे जीवन को घसीटने पर मजबूर हो गये। संयोग वशात् स्वतंत्रता मिली, किन्तु प्रशासन के अनुभवों से रहित, पक्षपाती, स्वार्थी, सत्तालोभी, तिकड़म बाज, झूठ–छल–कपट का प्रयास करने वाले आत्म बल से रहित, अधार्मिक, नास्तिक सत्ताधीशों से राष्ट्र का जो विकास; शिक्षा, स्वास्थ्य , सन्मत्ति, चरित्र, आदि गुणों से होना चाहिए था वह अब तक नहीं हो पाया, इसे दुर्भाग्य नहीं कहना चाहिए, यह हमारे पूर्वजों के कर्मों का परिणाम तथा प्रभाव है।

उत्तम भौगोलिक स्थिति, प्राकृतिक सम्पदा, आदर्श धार्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक परम्पराओं के होते हुए भी आज आर्यावर्त में अनेक क्षेत्रों में पिछाड़ापन है, उसमें निम्न कारण मुख्य है, जिन्हें दूर करना चाहिए ऐसा मैं समझ पाया हूँ। अपूर्ण, अस्पष्ट, विसंगत, विरोधाभासी, पक्षपात युक्त संविधान; महंगी, जटिल दीर्घसूत्री न्याय व्यवस्था, क्षेत्रिय हितों वाली अनेक राजनैतिक पार्टियां, शिक्षा संस्थानों में त्याग–तपस्या ईश्वर विश्वास, सामाजिक राष्ट्रीय सेवा की भावना को उत्पन्नन करना, अश्लील, अभद्र अशिष्ट चलचित्रों का निर्माण, मीस भक्षण, मादक द्रव्यों का सेवन करने हेतु प्रोत्साहन करना, ढोंगी, पाखण्डी, धूर्त , चालाक, धर्मध्वजी बाबाओं पर प्रतिबंध न कर पाना, फलित ज्योतिष भविष्य फल मुहूर्त, शकुन तन्त्र, यन्त्र जन्मपत्री आदि अंधविश्वासों को न रोकना, नये नये मत पंथ, सम्प्रदायों गुरुडमों, देवी देवताओं का प्रादुर्भाव होना, अयोग्यों की महत्वपूर्ण पदों पर आरक्षण द्वारा नियुक्ति, गौ आदि पशुओं वध, विषय भोगों को प्रोत्साहित करने वाली विदेशी कम्पनियों का आगमन, सह शिक्षा, प्राचीन गौरवयुक्त इतिहास का ज्ञान न करना, आंग्लभाषा को अनिवार्य पढ़ाना इत्यादि ऐसे महत्वपूर्ण विषय हैं, जिनके ऊपर शीघ्र कार्यवाही करनी चाहिए।

हे निराकार सर्वज्ञ, सर्वव्यापक कर्मों के साक्षी तथा फल प्रदाता प्रभो! आपसे प्रेरणा प्राप्त करके वैदिक धर्म का पुनरुद्धार करने हेतु ऋषि दयानन्द ने समग्र विश्व में क्रान्ति करने हेतु आर्य समाज रूपी आन्दोलन चलाया था, वह आज शिथिल हो गया है, ऊपर से नीचे तक संगठन विच्छिन्न समाप्त होता जा रहा है। सर्वत्र मतभेद, ईर्ष्या–द्वेष, विवाद झगड़े, मुकदमे बाजी, स्वार्थपूर्ति की प्रवृतियां बढ़ती ही जा रही हैं। जन सामान्य के मनों में निराशा व्याप्त हो गयी है और भविष्य अंधकार मय प्रतीत हो रहा है। समाज का लाभ विश्व तक पहुंचाना था वह व्यक्तिगत रह गया है। समाज का लाभ विश्व तक पंहुचाना था वह व्यक्तिगत रह गया है। हे देव अब तो आप ही उद्धार करो, सद्बुद्धि , साहस, बल देकर स्वामी दयानन्द जी के स्वप्न साकार करो– "भगवान् आर्यों को ऐसी लगन लगा दे; वैदिक धर्म की खातिर मरना इन्हें सीखादे" यही प्रार्थना है इसे आप ही पूरा करा सकते हैं–

ज्ञानेश्वरार्य
यज्ञ मन्डल
ब्रिसटल, इग्लैण्ड

****

www.thearyasamaj.org

डी. ए.वी. पुण्डरी में निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल पूण्डरी के प्रांगण में आर्य युवा समाज इकाई की ओर से निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। स्कूल की चेयर पर्सन श्रीमती सुषमा गुप्ता तथा स्थानीय प्रबंधक समिति द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर शिविर का शुभारंभ किया गया। इस शिविर की अध्यक्षता प्रसिद्ध समाज सेवी बाबू मदन मोहन हाबड़ी ने की। शिविर में चिकित्सकों की टीम में डॉ. दीपक गर्ग (नेत्र रोग विशेषज्ञ) डॉ. अनुपम गर्ग (स्त्री रोग विशेषज्ञ) डॉ. कुलजीत कुमार (हड्डी रोग विशेषज्ञ) डॉ. राजबीर सिंह चौधरी (सामान्य रोग विशेषज्ञ) ने अपनी सेवाएँ देकर लगभग 475 रोगियों की जांच की तथा निःशुल्क दवाइयां बांटी गई। स्कूल की प्रधानाचार्या श्रीमती साधना बख्शी ने इस अवसर पर आए हुए सभी चिकित्सकों एवं मेहमानों का हार्दिक स्वागत किया तथा आर्य युवा समाज के माध्यम से किए गए सामाजिक कार्यों तथा उद्देश्यों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। आर्य युवा समाज इकाई द्वारा समय-समय पर वरिष्ठ नागरिकों तथा जरूरतमंदों की सेवा करने में हमेशा तत्पर रहता है।

इस अवसर पर स्थानीय प्रबंधक समिति के सदस्यों सहित विद्यालय के समस्त अध्यापक व कर्मचारी एवं आर्य युवा समाज के सदस्य उपस्थित थे। प्राचार्या श्रीमती साधना बख्शी ने सभी चिकित्सकों को स्मृति चिन्ह से सम्मानित कर विदाई दी।

☞ पृष्ठ 9 का शेष

गायों का...

शोर बिल्कुल नहीं होता। और डीजल से चले तो इतना शोर होता है कि कान फट जाएँ!! तो ये सब जज साहब की समझ में आ गया।

फिर हमने कहा, रोज का 10 किलो गोबर इकट्ठा करें तो एक साल में कितनी मैथेन गैस निकलती है? और 20 साल में कितनी मिलेगी और भारत में 17 करोड़ गाय हैं। सबका गोबर एक साथ इकट्ठा करें और उसका ही इस्तेमाल करें तो 1 लाख 32 हजार करोड़ की बचत इस देश को होती है बिना डीजल, बिना पट्रोल के हम पूरा ट्रांसपोर्टेशन इससे चला सकते हैं। अरब देशों से भीख माँगने की जरूरत नहीं और पट्रोल डीजल के लिए अमेरिका से डॉलर खरीदने की जरूरत नहीं। अपना रुपया भी मजबूत।

जब इतने सारे calculation राजीव भाई ने कोर्ट के सामने रखे तो सुप्रीम कोर्ट के साहब जज ने मान लिया गाय की हत्या करने से ज्यादा उसको बचाना आर्थिक रूप से लाभकारी है।

जब कोर्ट की opinion आई तो ये मुस्लिम कसाई लोग भड़क गए उनको लगा कि अब केस उनके हाथ से गया। क्योकि उन्होंने कहा था कि गाय का क़त्ल करो 7000 हजार की इन्कम पाओ लेकिन इधर राजीव भाई ने सिद्ध कर दिया कि क़त्ल ना करो तो लाखों करोड़ों की इन्कम!! फिर उन्होंने अपना trump card खेला। उन्होंने कहा कि गाय का कत्ल करना हमारा धार्मिक अधिकार है (this is our religious right)

तो राजीव भाई ने कोर्ट में कहा अगर ये इनका धार्मिक अधिकार है तो इतिहास में पता करो कि किस-किस मुस्लिम राजा ने अपने इस धार्मिक अधिकार का प्रयोग किया? इस पर कोर्ट ने कहा ठीक है एक कमीशन बैठाओ, हिस्टोरियन को बुलाओ और जितने मुस्लिम राजा भारत में हुए सबकी history निकालो दस्तावेज़ निकालो। किस-किस राजा ने अपने इस धार्मिक अधिकार का पालन किया यह पता लगाया जाए।

पुराने दस्तावेज़ जब निकाले गए तो उससे पता चला कि भारत में जितने भी मुस्लिम राजा हुए एक ने भी गाय का क़त्ल नहीं किया। इसके उल्टा कुछ राजाओं ने गायों के क़त्ल के खिलाफ़ कानून बनाए। उनमें से एक का नाम था बाबर। बाबर ने अपनी पुस्तक बाबरनामा में लिखवाया है कि मेरे मरने के बाद भी गाय के क़त्ल न करनेका कानून जारी रहना चाहिए। तो उसके पुत्र हुमायूँ ने भी उसका पालन किया और उसके बाद जितने मुगल राजा हुए सबने इस कानून का पालन किया including औरगंजेब।

फिर दक्षिण भारत में एक राजा थे हैदर अली टीपू सुल्तान के पिता। उन्होंने एक कानून बनवाया था कि अगर कोई गाय की हत्या करेगा तो हैदर उसकी गर्दन काट देगा। हैदर अली ने ऐसे सेंकड़ो का साईयों की गर्दन काटी थी, जिन्होंने गाय को काटा था। फिर हैदर अली का बेटा टीपू सुल्तान आया तो उसने इस कानून को थोड़ा हल्का कर दिया। उसने कानून बना दिया कि गर्दन की बजाय हाथ काट दिए जाएँगे। टीपू सुलतान के समय में कोई भी अगर गाय काटता था तो उसके हाथ काट दिये जाते थे।

ये दस्तावेज जब कोर्ट के सामने आए तो राजीव भाई ने जज साहब से कहा कि आप जरा बताइए अगर इस्लाम में गाय को कत्ल करना धार्मिक अधिकार होता तो बाबर जो कट्टर मुसलमान था, 5 वक्त की नमाज पढ़ता था, औरंगजेब तो सबसे ज्यादा कट्टर था। इन्होंने क्यों नहीं गाय का क़त्ल करवाया? और क्यों गाय का क़त्ल रोकने के लिए कानून,बनवाए? क्यों हैदर अली ने कहा कि वो गाय का क़त्ल करने वाले के हाथ काट देगा?

राजीव भाई ने कोर्ट से कहा कि आप हमें आज्ञा दें तो हम ये कुरान शरीफ़, हदीस, आदि जितनी भी पुस्तकें हैं उन्हें कोर्ट में पेश करते हैं और कहाँ लिखा है कि गाय का क़त्ल करो ये जानना चाहतें हैं। और आपको पता चलेगा कि इस्लाम की किसी भी धार्मिक पुस्तक में नहीं लिखा है कि गाय का कत्ल करो। हदीस में तो लिखा हुआ है कि गाय की रक्षा करो क्योंकि वो तुम्हारी रक्षा करती है। पैगंबर मुहमद साहब का statement है कि गाय अबोल जानवर है इसलिए उस पर दया करो। एक जगह लिखा है गाय का क़त्ल करोगे तो दोज़ख में भी जगह नहीं मिलेगी! मतलब जहन्नुम में भी जमीन नहीं मिलेगी।

राजीव भाई ने पुनः कोर्ट से कहा अगर कुरान ये कहती है, मुहम्मद साहब ये कहते हैं हदीस ये कहती है तो फिर ये गाय का क़त्ल करना धार्मिक अधिकार कब से हुआ? पूछो इन कसाईयों से? इस पर कसाई बौखला गए। तब राजीव भाई ने कहा अगर मक्का मदीना में भी कोई किताब हो तो ले आओ।

अंत कोर्ट ने उनको 1 महीने का समय दिया कि जाओ और दस्तोवज ढूँढ के लाओ जिसमें लिखा हो कि गाय का क़त्ल करना इस्लाम का मूल अधिकार है। एक महीने तक भी कोई दस्तावेज़ नहीं मिला। कोर्ट ने कहा अब हम ज्यादा समय नहीं दे सकते। अंत में 26 अक्तूबर 2005 को judgement आ गया। आप चाहें तो judgement की copy www.supremecourtcaselaw.com पर जाकर download कर सकते हैं।

ये 66 पन्नों का judgement है। सुप्रीम कोर्ट ने एक इतिहास बना दिया और उन्होंने कहा कि गाय को काटना संवैधानिक पाप है, धार्मिक पाप है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि गौ रक्षा करना, सर्धवन करना देश के प्रत्येक नागरिक का संवैधानिक कर्त्तव्य है। सरकार का तो है ही नागरिकों का भी संवैधानिक कर्तव्य है। अब तक जो संवैधानिक कर्तव्य थे जैसे, संविधान का पालन करना, राष्ट्रीय ध्वज, का सम्मान करना चाहिए, क्रांतिकारियों का सम्मान करना, देश की एकता, अखंडता को बनाए रखना। आदि आदि, अब इससे गौ की रक्षा करना भी जुड़ गया है।

सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि भारत के 34 राज्यों की सरकारों की जिम्मेदारी है कि वो गाय का क़त्ल अपने-अपने राज्य में बंद कराएँ। किसी राज्य में गाय का क़त्ल होता है तो उस राज्य के मुख्यमंत्री की जिम्मेदारी है, राज्यपाल की जवाबदारी, चीफ सेक्रेटरी की जिम्मेदारी है, वो अपना काम पूरा नहीं कर रहे हैं तो ये राज्यों के लिए संवैधानिक जवाबदेही है।

कानून दो स्तर पर बनाए जाते हैं। एक जो केन्द्र सरकार बना सकती है और दूसरा राज्यों की राज्य सरकारें बना सकती हैं। अगर केन्द्र सरकार ही बना दे तो किसी राज्य सरकार को बनाने की जरूरत नहीं। केन्द्र सरकार का कानून पूरे देश में लागू होगा। आप सब केन्द्र सरकार पर दबाव बनाएँ जब तक केन्द्र सरकार कानून नहीं बनाती तब तक अपने-अपने राज्य की सरकारों पर दबाव बनाएँ।

याद कीजिए उस क्रांतिकारी मंगल पाण्डेय को जिसने ने इतिहास बना दिया। वह फाँसी पर चढ़ गया लेकिन गाय की चर्बी के कारतूस अपने मुंह से नहीं खोले! जिस अंग्रेज़ अधिकारी ने उसको मजबूर किया उसको मंगल पांडे ने गोली मार दी। तो हमने कहा था कि हमारी तो आज़ादी का इतिहास गौ रक्षा से शुरू होता है। इसलिए गाय की रक्षा उतनी ही महत्त्वपूर्ण है जितनी हमारी आजादी की रक्षा महत्त्वपूर्ण।

– वेद सदन
तिवारी कॉलोनी
होशंगाबाद (म.प्र.)

www.thearyasamaj.org

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11/6066/2012-14
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103/2012-14
POSTED AT N.D.P.S.O. ON 30-31 /10/2013
रजिस्ट्रेशन नं. आर0 एन0 आई0 39/57

बाढ़ राहत कार्य में डी.ए.वी. जमालपुर ने किया योगदान

इस वर्ष (2013) बिहार राज्य के अन्य जनपदों की तरह मुंगेर जनपद में भी गंगा की बाढ़ की विभीषिका में हज़ारों लोग प्रभावित हुए। लोग बेघर–बार होकर सड़कों एवम् विद्यालयों में रहने को विवश हो गए। भोजन के भी लाले पड़ गए। ऐसी स्थिति में डी.ए.वी. जमालपुर विद्यालय प्रबंधन ने आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा एवं डी.ए.वी. बिहार जोन–2 के तत्वांवधान में बाढ़ राहत कार्य करने का निर्णय लिया। इसके लिए सभी शिक्षकों एवम् गैर–शैक्षणिक कर्मचारियों ने एक दिन का वेतन सहर्ष बाढ़ राहत कार्य के लिए दिया। विद्यालय के छात्र–छात्राओं ने भी इस पुनीत कार्य में अपना भरपूर योगदान किया।

विद्यालय के छात्र–छात्राओं, शिक्षक–शिक्षिकाओं एवं कर्मचारीगण ने साथ मिलकर खाने के पैकेट बनाये जिसमें उपयोगी खाद्य पदार्थ, मोमबत्ती, माचीस, वस्त्र, इत्यादि दिया गये। तत्पश्चात् राहत की आस लगाये कई दिनों से भूखे–प्यासे बाढ़ पीड़ितों को पहला निवाला उपलब्ध कराकर उन्हें राहत दिलाई गई।

आर्य समाज अम्बाला शहर में वेद प्रचार

आर्य समाज डी.ए.वी. कॉलेज मार्ग अंबाला शहर के तत्वावधान में तीन दिवसीय वेद प्रचार महोत्सव का आयोजन सोहन लाल शिक्षण महाविद्यालय अम्बाला शहर में हुआ। इस महोत्सव में भारी संख्या में आर्य समाज से जुड़े व्यक्ति तथा डी.ए.वी. संस्थाओं के अध्यापक तथा प्राचार्यों ने भाग लिया। श्री विरेन्द्र शास्त्री सहारनपुर निवासी ने तीन दिन वेदों के महत्व तथा ऋषि दयानंद सरस्वती के जीवन पर प्रकाश डाला। उन्होंने संस्कार तथा पारिवारिक ताना बाना पर बहुत रोचक व्याख्यान किया।

पंडित राम निवास आर्य अपने भजनों द्वारा वेदों का महत्व बताया। तथा मां की महत्ता के बारे में भी भजन प्रस्तुत किये। स्वामी करुणानंद ने भी ऋषि दयानंद के जीवन पर प्रकाश डाला।

अंतिम दिन का कार्यक्रम प्रातः हवन यज्ञ से शुरु हुआ। हवन यज्ञ के बाद 2 बजे तक वेद प्रचार का कार्यक्रम चला। श्री राजेन्द्र नाथ, उप–प्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी, नई दिल्ली इस समारोह में मख्य अतिथि थे। उन्होंने वेदों के महत्व पर प्रकाश डाला। डॉ. देवराज गुप्ता ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। समाज के प्रधान श्री जे.एस.नैन ने श्री राजिंद्र नाथ, डॉ. देवराज गुप्ता तथा सीाी आर्य समाजों से आए व्यक्तियों का स्वागत किया। अंत में डा. विवेक कोहली प्राचार्य सोहन लाल शिक्षण महाविद्यालय ने सभी का धन्यवाद किया।

इस अवसर पर आर्य समाज रेलवे रोड, आर्य समाज मॉडल टाऊन, आर्य समाज नारायणगढ़, आर्य समाज बड़ोदी, आर्य समाज जंडली तथा आर्य समाज प्रेम नगर के प्रतिनिधि भी शामिल हुए।

शांति पाठ व जयघोष के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

एम.आर.ए. डी.ए.वी. सोलन ने मनाया महात्मा आनन्दस्वामी जन्मोत्सव

एम.आर.ए.डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल सोलन हि.प्र. में आर्य युवा समाज के तत्वावधान में दिनांक आनन्द स्वामी जन्मोत्सव बड़े धूम धाम से मनाया गया। इस अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से महात्मा स्वामी जी को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

समारोह का शुभारम्भ प्रधानाचार्या श्रीमती अनुपमा शर्मा के यजमानत्व में वैदिक हवन के साथ किया गया। उसके पश्चात् कक्षा छठी के विद्यार्थियों ने ईश वन्दना प्रस्तुत की। आर्य युवा समाज के विद्यार्थियों ने लघुनाटिका के माध्यम से महात्मा जी के सामाजिक कार्य एवं योगदानों का वर्णन किया। विशाल चौधरी ने कविता के द्वारा महात्मा आनन्द स्वामी जी विशेषताओं का वर्णन किया। इस जन्मोत्सव समारोह में आर्य युवा समाज के सदस्यों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया।

प्रधानाचार्या ने महात्मा जी की जीवनी पर प्रकाश डालते हुए बताया कि महात्मा आनन्द स्वामी बीसवीं शताब्दी के महान सन्त थे। उन्होंने सबको महात्मा आनन्द स्वामी जी के बताए गए मार्ग पर चलने व उनके आदर्शों को अपनाने की प्रेरणा दी।

आर.आर.बावा डी.ए.वी. बटाला में हुआ 'प्रेरणा–उत्सव' का आयोजन

आर.आर. बावा डी.ए.वी. कॉलेज फॉर गर्ल्ज बटाला में 'प्रेरणा–उत्सव' का आयोजन किया गया, जिसमें श्री अविनाश राय खन्ना, सांसद, राज्य सभा, मुख्य अतिथि स्वरूप शामिल हुए। श्री एस. पी. मरवाहा, चैयरमैन लोकल मैनेजिंग कमेटी, प्रि. डा. अजय सरीन, श्री राजेश क्वात्रा तथा अन्य गणमान्यों ने उनका पुष्पों से स्वागत किया। स्वामी दयानंद स्टडीज् सैंटर की कोओर्डिनेटर (श्रीमति) राज शर्मा द्वारा 'ओम्' ध्वज भेंट किया गया। मुख्य अतिथि श्री खन्ना जी ने देश के सामने खड़ी चुनौतियों–मंहगाई, सामाजिक बुराईयों, भ्रष्टाचार, शिक्षा प्रणाली, आतंकवाद व भ्रूण हतया के बारे में चर्चा करते हुए युवाओं की भूमिका के बारे में अति विस्तार से चर्चा की। उन्होंने नैतिक मूल्यों की कमी को देश की कई समस्याओं की जड़ बताया व कहा कि माँ–बाप एवं परिवार अपने बच्चों को सही संस्कार नहीं दे पा रहे। हरप्रीत कौर, बलजीत कौर, रवनीत कौर व प्रियंका को बढ़िया प्रश्न पूछने पर सम्मानित किया गया। इस मौके पर उन्होंने कॉलेज को पाँच लाख रु. की ग्रांट देने की घोषणा भी की। कॉलेज के समूह स्टाफ व छात्राओं के अतिरिक्त शहर के गणमान्य व्यक्ति इस उत्सव पर उपस्थित थे।

मुद्रक व प्रकाशक – **श्री प्रबोध महाजन,** सभा मंत्री द्वारा **मदन गोयल** के प्रबंध में **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 से प्रकाशित। स्वामित्व – आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 (दूरभाष : 23362110, 23360059) सम्पादक – **श्री पूनम सूरी**